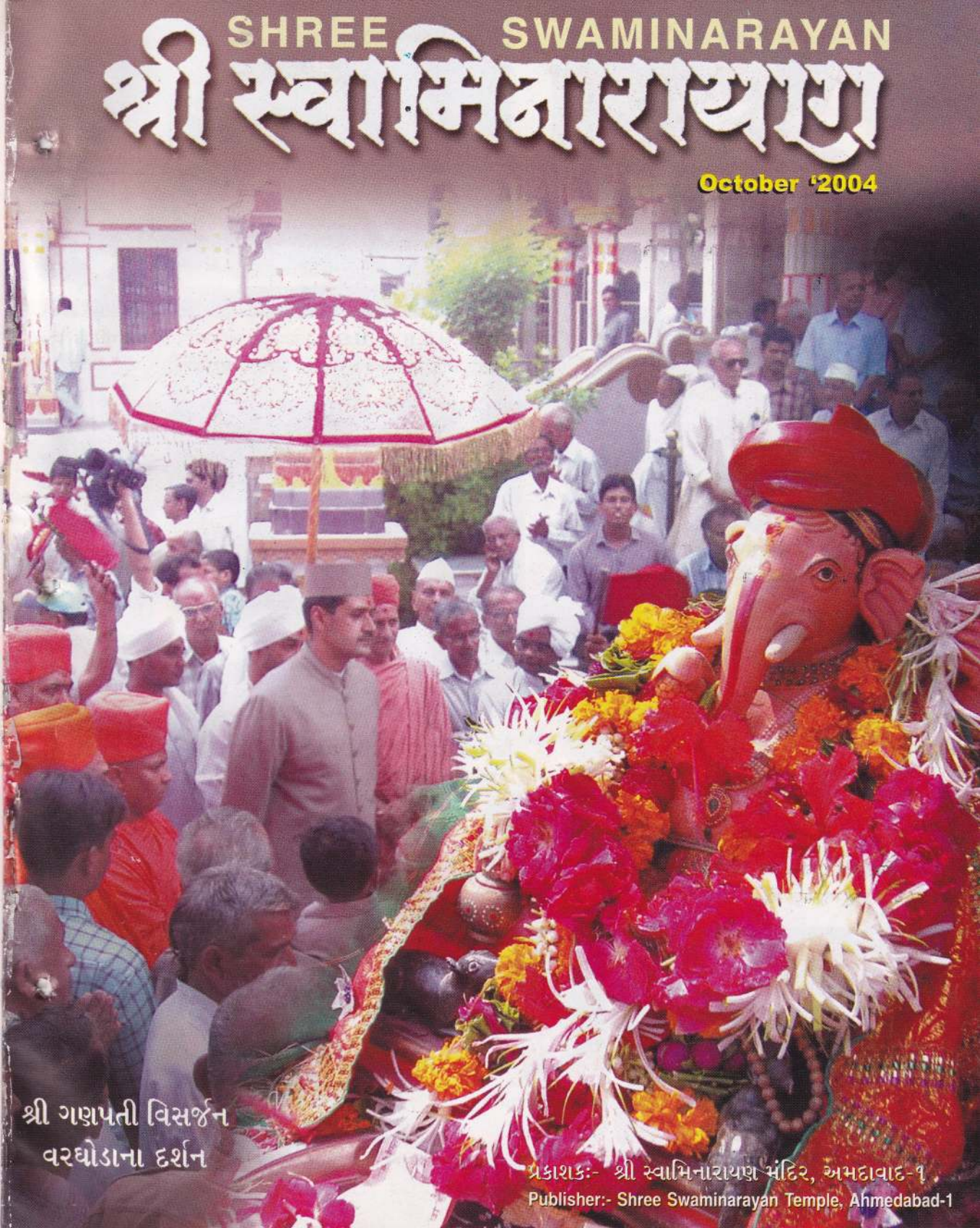
# SHREE SWAMINARAYAN
# શ્રી સ્વામિનારાયણ

October '2004



શ્રી ગણપતી વિસર્જન
વરઘોડાના દર્શન

પ્રકાશકઃ- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧
Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



एप्रोच मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री महापूजा की आरती उतारते हुए ।



डिट्रोइट (I.S.S.O., U.S.A.) के नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठाविधि करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



हिंमतनगर मंदिर में सत्संग सभा प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारते भक्तजन ।



डिट्रोइट मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा की आरती उतारते हुए प.पू. महाराजश्री ।



प.भ. प्रफुल्लभाई ( न.ना.फा. वाले ) के यहाँ महापूजा विधि करते हुए महाराज श्री ।



डिट्रोइट मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर श्री नरनारायणदेव युवक मंडळके सक्रिय सभ्य श्री अंकित सभा को संबोधित करते हुए ।



जेतलपुर मंदिर में अधिकमास पाटोत्सव के यजमान प.पू.ध.धु. महाराजश्री की आरती उतारते हुए ।



जेतलपुर मंदिर में महापूजा मे दिव्य लाभ देते हुए महाराजश्री ।




संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ ( मंदिर )
२७४७८०७० ( स्वा. बाग )
फेक्स
०७९-२७४५२१४५

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
( महंत स्वामी )

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश $ 100
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह ( मास ) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र ( प्रधान पंडित )
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद


# SHREE SWAMINARAYAN श्री स्वामिनारायण


वर्ष - ३ अक्टुबर -२००४


## अ नु क्र म णि का


| | | |
|---|---|---|
| १. | अस्मदीयम | २ |
| २. | प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा एवं भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा | ३ |
| ३. | 'दया नही' क्या 'दयानिधी' | ४ |
| ४. | उपनयन संस्कार | ५ |
| ५. | हँसना है धीरे-धीरे | ८ |
| ६. | लक्ष्य | ९ |
| ७. | संतोष का मूल | ११ |
| ८. | इमानदारी का फल | १३ |
| ९. | सन्ध्या आरती | १४ |
| १०. | गुरु की खोज | १५ |
| ११. | बाल वाटिका<br>(१) मुठ्ठी बन्द नहीं करनी चाहीए | १७ |
| १२. | समाचार वृत्तांत | १८ |



प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : snndmandir@india.com
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७

# अस्मदीयम्

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

अपना मानव समाज उत्सव प्रिय हैं तथा सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण को भी उत्सव प्रिय है । इसीलिये तो वारंवार जन्माष्टमी, प्रबोधिनी फूलदोलोत्सव, रामनवमी इत्यादि पवित्र त्यौहार धूम-धाम से भगवान श्री स्वामिनारायण मनाते थे जिस के स्मरण स्वस्म आज भी वही परंपरा उत्सवों की हमारे मन-बुद्धि तथा विचारों को तरोताजा एवं जीवंत रखती है । जैसेनदी में बहता पानी सदा ताजा एवं स्वच्छ रहता है, उसी प्रकार मनुष्य की शरीर क्रिया शील रहे तो ताजी एवं स्वस्थ रहती है । इसी प्रकार विचार एवं ज्ञान का प्रवाह बहता रहे तो उसमें ही स्वस्थता तथा कल्याणकारी गुणों का भंडार परिपूर्ण होकर अनेक जीवों को आत्यंतिक कल्याण होता रहेगा । जब तक इस जीवको मोक्ष या आत्यंतिक कल्याण का मार्ग नही मिलता तब तक जन्म तथा मृत्यु के भय से छुटकारा पाना कठिन है । भयभीत जीवात्मा मृत्यु के डर से इधर-उधर दौडता रहता है । यहाँ वहाँ आश्रय प्राप्ति हेतु शोध करता रहता है । उसी में जीव को वारंवार नवीनता तथा ताजगी मिले इस हेतु से जीव की प्रवृत्ति यत्र-तत्र देखने को मिलती है । जगत का नाशवंत पदार्थ हो या आध्यात्मिक के परम पद मोक्ष का मार्ग ही क्यों न हो, सर्वत्र प्रावहिता तथा नवीनता ही जीव को सुख का अनुभव कराती है । इसीलिए तो कहावत है कि "पानी तो बहता भला, साधु तो रमता भला" इसीकारण से अपने शास्त्रों में तीर्थयात्रा का महत्व गाया गया है । श्रीहरि नीलकंठ वर्णी के स्वस्म में समग्र भारत वर्ष की तीर्थयात्रा में ऐसी ही नवीनता, ताजगी तथा विविध प्रकार के मनुष्यों का अनुभव किया था । जैसे कि सेवकराम जैसा साधु भी श्रीहरि जब यात्रा में गये तो न मिला ? नहीं गये होते तो ऐसा अनुभव कैसे होता ? अनेक शास्त्रों का चिंतन, कितने साधु, संत, सिद्ध तथा विद्वानों के सत्संग का लाभ मिलना जीवन में बहुत ही दुर्लभ है । एक ही स्थान या एक ही व्यक्ति में अपना ज्ञान या अनुभव रुक जाये तो उसकी गति बोधित हो जाती है । इसलिये परिवर्तन जैसे प्रकृति द्वारा ऋतिओं में होता है वैसे ही मनुष्य के जीवन में तथा समाज में परिवर्तन आवश्यक है । परिणाम स्वस्म सर्वत्र आनन्द का अनुभव होता है । ऐसा ही आनन्द प्राप्त करते रहें और मोक्षमार्ग से थोड़ा भी चलाय मान न हो ऐसी सावधानी बनी रहे यही मनुष्य जीवन की सार्थकता है ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

*– शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का*

*जयश्री स्वामिनारायण*



## प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

सितम्बर - २००४

४-९-२००४ से १५-९-२००४ तक डिट्रोइट (I.S.S.O., U.S.A.) श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा, सत्संग सभायें, धर्मयात्रा, एवं हरिभक्तंक्तों के यहाँ पदार्पण ।

१६-९-२००४ से २३-९-२००४ तक केनेडा में पदार्पण, सत्संग सभायें तथा नये मुमुक्षुओं को मंत्र दीक्षा इत्यादि कार्यक्रम ।

२४-९-२००४ से २८-९-२००४ तक न्यूजर्सी मंदिर में पदार्पण एवं धर्मयात्रा

२९-९-२००४ को स्वदेश आगमन ।



## भावी आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रूपरेखा

सितम्बर - २००४

२ से ४ श्री स्वामिनारायण जयपुर ( राज. ) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

६. कांकरिया मंदिर में यज्ञ पूर्णाहुति पर पदार्पण ।

७. मूली श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी उत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

१२. श्री सहजानंद गुरुकुल विसनगर में पदार्पण ।

१३. श्री मुक्तेश्वर महादेव मंदिरमें अभिषेक पूजन हेतु पदार्पण ( नवा वास हाथीखाना )

१७. श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा जयंत ग्रुप सम्मेलन में आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण ।

१८. श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद में श्री गणपति पूजन प्रसंग पर पदार्पण ।
सन साईबर सीटी बापुनगर में उद्घाटन एवं आशीर्वाद ।

१९. श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा में पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट सत्संग सभा में पदार्पणा ।

२२. वणुगांव में सत्संगियो की मूली धाम यात्रा प्रस्थान प्रसंग पर आशीर्वाद हेतु पदार्पण ।

२४. अहमदाबाद मंदिर में श्री गणपतिजी की शोभायात्रा में पदार्पण ।

२५. नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर कथा पारायण का शुभारंभ, पूजन विधि तथा आशीर्वाद ।

२६. प.भ. योगेशकुमार रमणलाल की नई स्कीम के उद्घाटन हेतु पदार्पण ( मोटेरा ) ।

# 'दया नही' क्या 'दयानिधी'

- अतुलभाई भानुप्रसाद पोथीवाला



गाँव पीपलाणा से प्रभाशंकरभाई गढपुर में श्रीजी महाराज का दर्शन करने आये थे। अक्षर दालान के पीछेवाले भाग में स्के हुए थे। प्रतिरात्रि को दो बजे उठकर भजन में हे दयानिधि ? हे दयानिधि ! ऐसा बोलते थे । भजन सुनकर महाराज उठ गये और मानसंगभाई से पूछे कि इस समय कौन क्या बोल रहा है। पार्षद मानसंगभाईने कहा कि प्रभाशंकरभाई ऐसा बोल रहा है कि 'दया नहीं' 'दया नहीं' महाराजने कहा कि प्रभाशंकर को बुलाओ ।

प्रभाशंकर को दालान में बुलाया गया महाराज ने पूछा कि क्या बोल रहे थे तो प्रभाशंकर ने कहा कि 'दया निधि, दयानिधि' ऐसा कीर्तन कर रहा था ।

श्रीजी महाराजनें मानसंगजी से पूछा तो उन्होंने कहा महाराज ? ये आपको देखकर घबड़ागये और इस तरह बोलने लगे । नहीं तो आपको दया कहाँ है, यदि आपको दया होती तो इस भयंकर ठन्ढी में सन्त लोग जहाँ तहाँ पडे रहते ? इसी लिए कहता हूँ कि दया नहीं ।

बाद में महाराज ने सगड़ी जलाई और सभी लोग आकर सगड़ी के आसेपास महाराज को घेरकर बैठ गये । महाराजने कहा कि आज हम एक प्रकरण करेंगे वह यह कि - जो एक रजाई देगा उसे एक चरणारविंद देंगे । जो दो रजाई देंगे उन्हे दो चरणारविंद देंगे ।

दादा खाचर ने तुरंत कहा महाराज ! मैं सौ रजाई दूंगा । वस्ताखाचर ने कहा कि महाराज ! मैं भी सौ रजाई दूंगा । इधर बगल के गाँव में खबर हो गयी कि महाराज एक रजाई पर अपना चरणारविंद दे रहे हैं तो गाँव के सभी लोग एक एक रजाई लेकर आने लगे । उस गाँव में एक मेधा सुथार रहता था । वह अत्यन्त गरीब था उसके भी मन में हुआ कि महाराज को हम भी कुछ दे, तो वह जिस कथरी को ओढता था उसे लेकर महाराज के पास गया और दंडवत प्रणाम करके अपनी गुदड़ी भगवान को अर्पण कर दिया ।

महाराजने कहा तुमको ओढने केलिए रजाई तो नहीं है ? नहीं महाराज ? मेरे पास कहाँ, से होगी । मैं तो मामा का नौकर हूँ । मेरे पास यही कथरी है । महाराज ने कहा ले आवो उसे मैं औढूंगा । यह कहकर उसकी कथरी को स्वयं ओढलिये । थोड़े समय तक ओढने के बात कथरी मेधा को देते हुए कहने लगे कि तुमको कौन देगा, इसलिए इसे लेजा मैं ओढलिया और सन्तों की सेवा भी हो गयी ।

अनंत कोटी ब्रह्मांड जिसके संकल्प मात्र से आत्यन्तिक तृप्ति प्राप्त करता है ऐसे पुरुषोत्तम नारायण अपने देह ऊपर मेघा की गुदड़ी धारण करके प्रसादीका करके वापस देदिये।

असीम श्रद्धा तथा सर्वस्व न्यौछावर करने की तमन्ना से परमात्मा ऐसे प्रसन्न हुए कि "दयानिथि" नाम जैसे उन्होने सार्थक कर दिया ।

दयानिधि तो सत्य में दया निधि ही हैं ।

# उपनयन संस्कार

- डॉ. वाचस्पति मिश्र प्रींसीपाल, श्री स्वामिनारायण सं महाविद्यालय, जेतलपुर



"उप" का अर्थ होता है "समीप" नयका अर्थ होता है प्राप्त करना या होना आर्थात् समीप में लेजाना। तो प्रश्न खड़ा होता है कि किसके समीप में लेजाना ? तो संस्कार की तरफ ले जाना। जिन १६ संस्कारों में उपनयन संकार का समभाव किया गया हैं वह सर्वोत्कृष्ट हैं। क्योंकि यही एक संस्कार है जो हमें मनुष्य से देव कोटि में ले जाता है। "देवं भूत्वा देवं यजेत्' की उक्ति को हम तभी चरितार्थ कर सकते है जब हमारे भीतर वह ऊर्जा हो, शक्ति हो, तेज हो, ज्ञान हो, बल हो, यह सभी कैसे सम्भव हो सकता है तो आप अपने ऋषियों का स्मरण करें जिन की धरोहर हमें शास्त्रों के रूप में प्राप्त है वे ही शास्त्रों, यन्त्रों, तन्त्रों, मन्त्रों के युगद्रष्टा और स्रष्टा रहे हैं जिनकी थाती आज रो रही है क्रन्दन कर रही है, हमारी सुप्तावस्था ही उस स्दन की परिचायिका है। हमें जागृत होना होगा, हमें वह क्रान्ति पैदा करनी होगी हमें अपने को पहचानना होगा। हम अपना स्वत्व खोचुके है पुनः खोये हुए स्वत्व को प्राप्त करने की एक ही उपाय है "संस्कार" यही संस्कार से यदि मेरा तन, मन, धन अनुप्राणित हो जाय तो हमारी कीमत कसौटी पर कसे हुए हीरे से अधिक हो जायेगी। आज हम उपेक्षित क्यों है ? जिन ऋषियों में "कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुम्" का सामर्थ्यथा जिनके तेज, बल, शक्ति, ऊर्जा, तत्व के सामने, राजा महाराजा ही नहीं बल्कि देवता भी प्रकंप्यमान हो जाते थे, तो क्या ? वही ऊर्जा, वही तेज, वही बल, वही शक्ति से युक्त अपने स्वत्व को पहचान कर आत्मसात नहीं कर सकते ? अब जागो उठो और संधान करों की स्थिति यदि हममें नहीं आयेगी तो हमारी उपेक्षा समाज द्वारा, सरकार द्वारा तथा अन्यान्य व्यवस्थाओं द्वारा होती रहेगी। हमारे पास ऐसे अमोघ अस्त्र हैं जिनका हम प्रयोग करें तो सारे ब्रह्मांड की गति रूक सकती है। विश्वामित्र स्पष्ट शब्द में कहते है - धिग बलं क्षत्रिय बलं ब्रह्म तेजो बलम् बलम्"। तो क्या ब्रह्मतेज केवल विचार वैचित्र्य से प्राप्त होना सम्भव है ? उसके लिये तो क्रिया करनी ही पडेगी। वह क्रिया है संस्कार। जिस संस्कार से एक

चमत्कृति पैदा होती है फिर वह मानव देव कोटि में आजाता है । कुछ प्रमाण उपनयन संस्कार के नीचे दिये जा रहे है -

अष्टमें वर्षे बाह्मणमुपनयेत् ॥१॥ गर्भाष्टमें वा ॥२॥ एकादशेक्षत्रियम् ॥३॥ द्वादशेवैश्यम् ॥४॥ आषोडशात् ब्राह्मणस्यानतीत कालः ॥५॥ आद्वाविंशात्क्षात्रियस्य आचतुर्विंशाद्वैश्यस्य अत ऊर्ध्वं पतिता सावित्रीका भवन्ति । यह आश्वलायन गृह सूत्र १-१९ १-१६ का प्रमाण है । इसी प्रकार पारस्करादि सूत्रों का भी प्रमाण है

जिस दिन जन्म हुआ हो अथवा जिस दिन गर्भ रहा हो उससे आठवे वर्ष में ब्राह्मण का, इग्यारहवें वर्ष में क्षत्रिय का बारहवें वर्ष में वैश्य का यज्ञोपवीत होना चाहिए । अथवा ब्राह्मण का १६ वर्ष में क्षत्रिय का २२ वर्ष में वैश्य का २४ वर्ष में यज्ञोपवित होना चाहिए यह भी एक वचन शतपथ ब्राह्मणों में मिलता है ।

मनुस्मृति कारका वचन

*ब्रह्मवर्चस कामस्य कार्यं विप्रस्य पञ्चमे ।*
*राज्ञो बलार्थिनः षष्ठे*
*वैश्यस्येहार्थिनोऽष्टमे ॥*

जिसे शीघ्र विद्या-बल और व्यवस्था करने की इच्छा हो और बालक भी पढने में समर्थ हुए हों तो ब्राह्मण के बालक का जन्म या गर्भ से पांचवे, क्षत्रिय का छठे, वैश्य का आठवें वर्ष में यज्ञोपवीत कर देना चाहिए ।

द्वयज्ञोपवीत का समय उत्तरायण सूर्य में शास्त्रकारो नें निश्चित किया है । "वसन्ते ब्राह्मणमुपनयेत्, ग्रीष्मे राजन्यम्, शरदि वैश्यम्, सर्वकालमेके । यह शतपथ ब्राह्मण २ । १ । ३ । ५ का वचन है । ब्राह्मण का वसन्त ऋतु में, क्षत्रिय का ग्रीष्म ऋतु में वैश्य का शरदऋतु में यज्ञोपवीत संस्कार करना चाहिए ।

यज्ञोपवीत से पूर्व का विधान

वयोव्रत ब्राह्मणो, यवागूव्रतो राजन्यः, आमिक्षा व्रतो वैश्यः,

शतपथब्राह्मण गो. २ । १० । ७ ।

अर्थात् जिस दिन बालक का यज्ञोपवीत करना हो उससे तीन दिन पूर्व अथवा एक दिन पूर्व तीन अथवा एकव्रत बालक से कराना चाहिए इन व्रतो में ब्राह्मण बालक एकवार या अनेकबार दुग्धपान करे, क्षत्रिय बालक यवागू (हलुवा) प्राश करे, वैश्य बालक को आमिक्षा अर्थात् दूध का फटा हुआ यावनाया हुआ पदार्थ जब भूख लगे तो खिलाना चाहिए । सभी के लिए निर्दिष्ट भोज्य देना चाहिए ।

इस प्रकार वह यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकारी होता है ।

यज्ञोपवीत का भी यही अर्थ है - यज्ञार्थ उपवीत, अर्थात् जिस उपवीत को धारण करना है वह यज्ञ के लिए होनी चाहिए, न कि खूंटी में लटकाने के लिए, या चाभी बाँधने के लिए या अन्य किसी व्यवसाय के लिए ।

जिन महाशयों के पास अपार सम्पदा है वे भी यज्ञोपवीत संस्कार की विधी का लोप कर रहे है, उन्हे तो ऐसे संस्कारो से परिचित होकर अपनी सन्तान ही नहीं अपितु ऐसे जिन्हें संस्कार की जरुत है लेकिन धनाभाव के कारण वंचित रहजाते है उनका वे सहयोग करें, और एक उत्तम संस्कार से अपनी परम्परा को जोडे ।

यज्ञोपवीत एक संस्कार ही नहीं है वल्कि आध्यात्मिकता तथा भौतिकता का समन्वय है । इस में गायत्री की शक्ति निहित है वह कैसे ? तो यज्ञोपवीती होकर ही । जब यज्ञोपवीत होगी तो ही सन्ध्या के अधिकारी होंगे । "अहरहः सन्ध्यामुपासीत्" की उक्ति को चरितार्थ कर सकेंगे । सन्ध्या नित्यकर्म में आती है । अर्थात् इसके अनुष्ठान से पाप निवृत्ति होती है । इतना ही नही अपितु ब्राह्मी वैष्णवी, रौद्री इन तीनों शक्तियों के साथ सन्ध्योपासन के द्वारा नित्य सम्बन्ध स्थापन होने से स्वतः

सन्ध्योपासक को आयु, शक्ति एवं आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त होती है ।

ऋषयों दीर्घ सन्ध्यात्वात् दीर्घमायु रवाप्नुयुः ।

प्रज्ञां यशश्च कीर्तिच ब्रह्मवर्चसमेव च ॥ ( श्रीमनुस्मृति )

दीर्घकालतक सन्ध्या करके ऋषिगण दीर्घायु, प्रज्ञा, यश, कीर्ति और ब्रह्मज्ञान प्राप्त करते है ।

सन्ध्या तीन प्रकार की होती है - प्रातः सन्ध्या, मध्याहन सन्ध्या, सायं सन्ध्या । इन तीनों काल की सन्ध्या करनेवाले सभी प्रकार के पाप से रहित हो जाते है । इतना ही नहीं सन्ध्या रहित व्यक्ति को किसी कर्म में अधिकार नहीं - जैसे-

सन्ध्याहीनोऽशुचिर्नित्यानर्हः सर्व कर्मसु ।

यदन्यत्कुस्ते कर्म नतस्य फल भाग् भवेत ॥ ( महर्षि दक्ष )

सन्ध्याहीन अशुचि पुरुष का किसी भी शुभ कर्म में अधिकार होता ही नहीं है । जो भी कर्म करता है उस फल से रहित हो जाता है । यज्ञोपवीती होने के बाद ही तीन महाव्याहृतियों वाली छन्दोमाता गायत्री का वही अधिकारी होता है-

*अकाररश्चाप्युकारश्च मकारश्च प्रजापतिः ।*
*वेदत्रयान्निरदुहत् भूर्भुवः स्वरितीतिच ।*
*त्रिभ्य एव तु वेदेभ्यः पादं पादमुदूदुहत् ।*
*तदित्यृचोऽस्याः सावित्र्याः परमेष्ठी प्रजापतिः*
*( मनुसंहिता )*
*गायत्री वेदजननी गायत्री पापनाशिनी ।*
*गायत्र्यास्तुपरं नास्ति दिवि चेह चपावनम् ॥*
*( शंखसंहिता )*

गायत्री मंत्र का अर्थ - ॐकार - अकार - उकार - मकार

१. उत्पत्तिकर्ता ब्रह्मा - शक्ति ब्रह्माणीजी ।

२. पालन कर्ता विष्णु - शक्ति लक्ष्मीजी ।

३. संहार कर्ता महाकाल ( शिवजी ) शक्ति महाकालीजी ।

भूःलोक, भूवः लोक, स्वर्गलोक, तत् वह सविता देव के श्रेष्ठतम का ध्यान करते है जो तुम्हारी बुद्धि को प्रेरित करता है । वह सविता देव मल विक्षेप, आवरण दोष के नाशार्थ तथा निष्काम कर्मयोग भक्तियोग एव ज्ञानयोग की ओर प्रेरणा करें । गायत्रीकी प्रशन्सा में लिखा है -

*गायत्रीं चैव वेदाश्च तुलया समतलोयन् ।*
*वेदा एकत्र सांगास्तु गायत्रीश्चैकतः समाः ।*
*( कूर्मपुराण )*

गायत्री और वेद को तुला पर जब तोलागया तो षडङ्गवेद एक तरफ केवल गायत्री एक तरह फिरभी समान ही रही।

इस प्रकार हम इस पर बहुत अधिक चिन्तन कर सकते है इसकी कोई सीमा नहीं है संस्कार चाहे जो भी हो वह सभी के लिये अपेक्षित है । इस आध्यात्मिकता के साथ भौतिकता भी निहित है - भौतिकता का तात्पर्य हमारे शरीर के साथ सद्यः फल देने वाला है, जब मेरे भीतर यह यज्ञोवीत का संस्कार रहेगा तो हम निश्चित ही लकवा, पक्षाघात, रक्तचाँप, ब्लडप्रेशर तथा अन्यान्यरोगों पर काबू पा सकेंगे । यह प्रेक्टिकल एवं चिन्तन का विषय है ।

यज्ञोपवीत संस्कार के वाद की विधि भी समाज के सामने रखनी चाहिए अन्यथा यह यज्ञोपवीत मात्र धागा बनकर रहजायेगी । इसलिए सन्ध्योपासना की विधि यज्ञोपवीत दीक्षा देने वाले पंडित बरों को चाहिए की उसकी विधि अवश्य बताये - क्योंकि यज्ञोपवीत में गायत्री मंत्र दीक्षा का विधान है उसी के लिए तो यज्ञोपवीत है । इसी बात को स्पष्ट लिख रहे है-

गायत्री रहितो विप्रः शूद्रादप्यशुचिर्भवेत् ।

*अनुसंधान पेईज नं. १२*

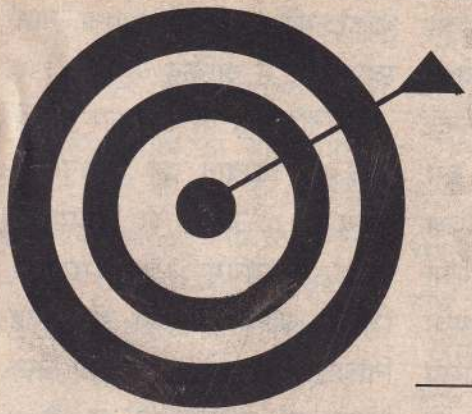
# हँसना है धीरे-धीरे

- शा.स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी ( महंत नारायणघाट )

आजके Hari, Vari तथा Money को झंझावात में लोगों की हंसी कहाँ खो गयी है । इसके स्थान पर बनावटी - प्लास्टीक स्माईल, डुप्लीकेट अथवा आर्टिफिसियल मात्र हंसी हो गयी है । हास्य तो प्रफुल्लित मन, रस, धन, चित्त में से बहता है जो शरीर के रोम रोम को प्रफुल्लित कर देता है । इसके अलावा सामने के व्यक्ति को भी क्षणभर के लिए आनंदित कर देता है । ऐसा हास्य अतिशय दुर्लभ है । मानव का हसमुख चहेरा मिलना भगवान का एक वरदान है । जैसे व्यक्ति का यह कुरदती श्रृंगार हो । जिसमें से सौंदर्य तथा व्यक्तित्व का निखार होता है । हम सभी विविध प्रंसगो पर अलग-अलग ढंग से अलग-अगल रीति से अलग-अलग स्तर पर हंसते रहते है । प्राय: मनुष्य अपनी प्राकृतिक हंसी को भूलता जा रहा है । जब हंसता है तो लगता है कि जबदस्ती हंसाया जा रहा है । अथवा किसी के उपहांस पर हंसता है । सरदार वल्लभभाई पटेल कोलेज के विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहे कि - हंसो खूब हंसो, लेकिन जीवन को हंसने जैसा मत बना देना । तीसरा अहंकार युक्त हास्य आडम्बर व्यक्त करता हुआ हास्य जो रावण-कुम्भकर्ण जैसा हास्य वह अट्टहास्य होता है । समूह में हास्य होता है । कभी-कभी व्यक्ति हंस रहा हो तो विना समझे भी उसकी मुखाकृति को देखकर भी लोग हेंसते हैं । कितने लोग तो अपने संतुष्टी पर हंसते है । कोई तो खड़खड़ाट कर ऐसा हंसता है कि चारो तरफ का वातावरण गूंझ उठता है ।

विविध हास्यों में जिस पर मुझे कहना है वह कुछ भिन्न ही है । जत तक हृदय में उद्वेग रहता है - तभीतक उसकी हंसी निरर्थक है । निर्मल हास्य केवल दो व्यक्तियों से प्राप्त हो सकता है ।

एक बालक से दूसरा ब्रह्म से इसमें बालक का हास्य मधुर प्रेमालु, निर्दोष होते हुए भी क्षणिक, अज्ञानता पूर्ण होता है । लेकिन ज्ञानी पुरुष जब हंसता है तो चैतन्य ब्रह्ममय होकर हंसता है और वह आनन्द स्वरुप हो जाता है उसी स्वरुप में विलीन हो जाता है । मुखारविन्द नित्य हास्य युक्त रहता है । यह आनन्द, यह हास्य लोगों को आनन्दित कर देता है । जब ध्यानस्थ होता है तो भी मंदमन्द मुस्कान नित्य होती रहती है । प्रभु की पूजा हो या आरती हो या तत्सम्बन्धि किसी भी क्रिया कलाप में मुखमुद्रा नित्य हास्य युक्त होती है । चाहे कथा में बैठे हो या किसी हरिभक्त के यहाँ पदार्पण कर रहें हों । जैसे कोई मुक्त आत्मा हो और हरस्थिति में केवल मुख में प्रसन्नता कभी मलीनता तो देखने को नहीं मिलती । ऐसी स्थिति में अपने प.पू. महाराजश्री सदा अन्दर तथा बाहर से नित्य आनन्द स्वरुप में दिखाई देते हैं । उनकी हास्य युक्तवाणी सदा सभी को आनन्दित करती रहती है । यदि इसीप्रकार महाराजश्री की जीवन गाथा अपने जीवन में उतर जाय तो अपना जीवन हराभरा हो जाय । यदि हंसना ही हो तो धीरे-धीरे मन्द-मन्द मुस्कान के साथ भगवान की प्रार्थना से लेकर जीवन की प्रत्येक गति में एक स्वस्थ होना आवश्यक है । हमें प.पू. महाराजश्री मिलें है जो पूर्ण है । उनके साथ हमारा जीवन भी पूर्ण है - क्योंकि हमें ऐसे मार्गदर्शक मिले है । इन्ही की चरण शरण में अपना जीवन हो तो जीवन की सार्थकता है । जिससे हर्ष, शोक, राग, द्वेष में अपना जीवन खो न जाय, अहंकार में हम डूब न जायं ऐसी प्रभु कृपा करना और जीवन में धीरे-धीरे मस्त होकर हंसते रहे ऐसी प्रभु को प्रार्थना ।



# लक्ष्य

साधु संकीर्तनदास गुरु घनश्यामदासजी ( लोयाधाम )

वैभवशाली विश्व में महान मानवता विलक्षणता या विचक्षणता बताना हो, या जीवन का सम्पूर्ण आनंद लेना हो तो जीवन सेतु का प्रथम सोपान है लक्ष्य ।

बर्फीली शिलाओं से आच्छादित हिमालय की सुन्दर भूमि या उस की हरियाली की कल्पना करना जैसे कठिन है, वैसे ही मनुष्य जीवन स्मी उत्कृष्ट भूमी को भी विना लक्ष्य के विचार करना अशक्य है । मानव जीवन में लक्ष्य सूर्य के समान है । जिसके जीवन में सूर्यस्मी प्रकाश है उसके जीवन में निराशास्मी अंधकार कभी नहीं आता है । लेकिन जिसने अपने चारित्र्य में लक्ष्य का आविष्कार नहीं किया, उसके जीवन में निराशा स्मी निशा साथ कभी नहीं छोडती है।

मानव जीवन में एकबार लक्ष्य निश्चित करलें बाद में उसे सिद्ध करने का प्रयास प्रारम्भ करदे जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो तब तक उसी में क्रियाशील रहे तो निश्चित ही चमत्कार होगा, और मधुरफल चखने के लिये मिलेगा । लक्ष्यवेधी बनने के लिये व्यक्ति की कोई उम्र नहीं होती । चाहे वह बालक हो या युवान हो, या वृद्ध किसी भी स्थिति में वह अपने लक्ष्य की तरफ बढ सकता है । जब से जो लक्ष्य की तरफ बढा उसी समय से उन्नती की शिखर पर पहुंच ने लगता है ।

सामान्यजीवन से लेकर सफलता के सुवर्णशीखर पर पहुंचने वाला इटली का एक फर्नीचर की पालिस करने वाला युवान एक समय ऐसा आया कि बादशाही कुर्सियो की पालिस करने लगा । यह देखकर सरकारी कर्मचारी ने पूछा कि इतना घिस घिस कर करेगा तो समय बहुत जायेगा, जल्दी पूरा करदो । उस समय वह कारीगर अपने उच्चलक्ष्य को ध्यान में रखकर उत्तर दिया कि हे कर्मचारी ? इसी कुर्सी पर एक दिन मुझे बैठना है । उट्टहास करके कर्मचारी चला गया । लेकिन वह युवान एक अद्वितीय लक्ष्य लेकर अपने वाक्य को सिद्ध कर दिया । और वही द्वितीय विश्व युद्ध में नायक के स्म में "मुसोलीनत" के नाम से जाना गया ।

लक्ष्य जीवन में वास्तविक स्वस्म को देने वाला होता है । जिसने जीवन में लक्ष्य को स्वीकार किया उसका जीवन उन्नति के मार्गपर दौड़ने लगता है । महानकार्य या महान व्यक्ति के पीछे यदि कोई महत्व या विशेष पीठबल है तो वह लक्ष्य है ।

स्वातन्त्र्य संग्राम की ज्वाला फैलाने वाले भगतसिंह हो या शौर्य का साक्षात्कार करानेवाले सरदार वल्लभभाई हों, अथवा स्वतंत्रता की दीप माला के मुख्य दीपक सुभाष बापू हो, इन सभी महापुस्मों ने

आजादी स्मी लक्ष्य को अमृतस्मी महौषधि माने थे । इस औषधि से ही गुलामी स्मी रोग को दूर कर सके थे।

लक्ष्य की एक बूंद भी उर्मी से भर देती है। जैसे व्यसनी को व्यसन मिलते ही नयी चेतना हो जाती है वैसे ही लक्ष्य वेधी को लक्ष्य का स्मरण करने के साथ ही, नयी तरंगे हिलोरे मारने लगती हैं। इसीलिए तो नोबेल विजेता "कार्ल रोबिया" कहता था कि "मेरी जिन्दगी यात्री अथवा मेरा सर्वस्व मेरा लक्ष्य है।" इसी लक्ष्य को आधार मानकर कितने शूरवीर संसार संग्राम में विजयश्री को प्राप्त किये, जिन्हे हम आज भी स्मरण करते है।

ऐसा ही एक नाम मिसडोनिया राज्य के राजकुमार का है । राजा फिलीप जब अपने अगलबगल के राजाओं को जीतने लगा उसी समय उसका छोटा बेटा उसके पास जाकर रोने लगा । और कहे लगा कि जब आप ही सब कुछ जीत लेंगे तो हम क्या करेंगे । कितने आश्चर्य की बात है कहाँ अभी खिलौनों से खेलने की उम्रः और कहाँ तुमुल संग्राम स्मी लक्ष्य । परंतु पिता को पुत्र में विश्वास था इसलिये सत्रह वर्ष की उम्र में ही पुत्र को राजतिलक करदिया । परिणाम स्वस्म एकतीस वर्ष की उम्र तक आधी दुनिया को हस्तगत करलिया । वही लक्ष्य वेधी बालक एलेकझांडर जो सिकन्दर के नाम से सुविख्यात हुआ । इस प्रकार तो अनेकानेक लक्ष्यबेधी विश्व के श्रेष्ठ नायक हुए है । लेकिन ऐसा लक्ष्य श्रीजी महाराजमें अथवा सत्पुस्मों में किया जाय उन्हे प्रसन्न करने में लक्ष्य लगाया जाय तो निश्चित ही अक्षरधाम का दरवाजा हस्तगत हो जाय ।

अनेक परिस्थितियों का सामना करने वाली लक्ष्यवेधा उदयपुर की महारानी कुंवरबा का भी ऐसा ही इतिहास है। रंगीले रमणीय राजस्थान के उदयपुर के राजा की रानी गुर्जरदेश के पवित्र विप्रो के सत्संग का रस जगा और लक्ष्य प्राप्ति की तरफ अग्रसर हो गयीं । अपने प्राणों की बाजी लगाकर उदयपुर के राजमहलका परित्याग किया और विकट संकट का सामना करते हुए श्रीहरिकृपा से गढडा पहुंची । वहाँ पर मोटी बा की आज्ञा से दादा खाचर की गौ-शाला में सेवा कार्य की । उन्हे अपने लक्ष्य तक पहुंचना था, इस लिए गोबर उठाने में भी संकोच नहीं हुआ । परंतु सारे विघ्नो को पार करके लक्ष्य को प्राप्त करना ही अन्तिम निर्णय था । परिणाम स्वस्म लक्ष्य को प्राप्त कीं और भक्तों की यादी में अपना नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित करगयीं ।

अनिश्चितता के अंधकार में भी कुछ कर दिखाने की भावना ही लक्ष्य है । "कार्यं वा साधयेयम् देहंवा पातयेयम्" का सिद्धान्त जिसके जीवन में आ गया वह निश्चित ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होता है । स्वप्नदेखने से लक्ष्य की प्राप्ति नहीं होती । जैसे पत्तों पर बना महल या हवाई किला स्वतः ढह जाता है वैसे ही स्वप्नों की दुनिया है । अंतःदृढता से "करो या मरो" का सिद्धात जीवन को स्वर्णीम बना देता है । इसीलिये तो पुस्मोत्तमनारायण जब पृथ्वी पर पधारे तो वे भी लक्ष्य को आगे रखकर प्रगति किये और वचनामृत में महाराजने कहा कि "हमारा विचार है थोड़ा लेकिन इतना शक्तिशाली है कि कोई अन्तराय करने आवे तो उसका मस्तक उडजाये सर्वोपरि नारायण का यह वचन जैसे ऊर्जा का पुंज हो और यह एक वचन ही अपने लक्ष्य की तरफ गति करके अन्तरहृदय में प्रकाश भर देता है । महाराज के चरणों में प्रार्थना करें कि हे प्रभो ! हमारे जीवन में लक्ष्य हर समय सजीवन बना रहे ..... ।

# संतोष का मूल

- प्रो. महादेव धोरियाणी ( राजकोट )



इस जगत में मनुष्यमात्र सुख की शोध में भटकता रहता है । परंतु सच्चा सुख बहुत कम लोगों को मिलता है । इसका कारण क्या है ? सुख भौतिक पदार्थो में नही मिलता, मनुष्य के हृदय में रहता है । यदि हृदय संतुष्ट हो तो मनुष्य शांति का अनुभव करता है । असंतोषी व्यक्तिको चाहे कितनी भी सम्पत्ति मिलजाय तो भी तृषा शान्त नही होती । जब तक संतोष नहीं आयेगा तब तक सच्चे सुख की प्राप्ति सम्भव नहीं ।

*सहि भवति दरिद्रो यस्यास्ति*
*विशाल तृष्णः ।*
*मनसि परितुष्टे कोऽर्थवान् को*
*दरिद्रः ॥*

जिसकी तृष्णा विशाल हो वही गरीब है । यदि मन संतुष्ट हो तो कौन धनवान तथा कौन गरीब ?

कहने के तात्पर्य यह कि "संतोषी नर सदा सुखी" संतोष यही परम सुख है । मानव मन सुख-दुःख, आनंद-आक्रन्द, हर्ष-शोक, विनोद-विषाद तथा सांति, अशांति का संगम स्थान है । अपना चंचल मन विविध सुखों की खोज में लगा रहता है । अति सुख की प्राप्ति के लिए अहर्निश प्रयत्न शील रहता है ।

संतोष की परिभाषा यह है कि "जरूरत भर की संपत्ति प्राप्त हो" इसी को संतोष कहते हैं । असंतोष में से अनेको दुःख उपन्न होते हैं । असंतोषी व्यक्ति का उत्थान बाधित हो जाता है । संतोष के बिना मनुष्य का जीवन मृगजल की तरह दौड़ने वाले हिरण जैसा ही है ।

"तृष्णावाला मनुष्य सदा गिरनारी, संतोषवाला जीव सदा सुखी" संतोष ही परम धन है । संतोष स्त्री धन प्राप्त होने पर ही लोभ, माया मोह आदि को जीता जा सकता है । और सदाचार को बल मिल सकता है । संपत्ति कभी कभी आपत्ति का कारण बन जाती है ।

*"हरि कहे द्रव्य गुणुं न ठारुं ।*
*कुबुद्धिने कलेश वधारनारुं ॥"*

संसार में अमृत-जहर दोनो ही है । समभाव तथा संतोष से जीनेवाले सदा अमृतही प्राप्त करते हैं । संतोष की प्रथम सीढी शांति है । अंतिम सोपान स्वर्ग है । संयम तथा संतोष होतो रोग, दोष, भय शोक, मनस्ताप इत्यादि सन्निकट नहीं आते । असंतोष मानव की जीवन नौका को संसार सागर में डुबा देता है । सुखी जीवन का मार्ग संतोष है । सादगी तथा सरलता में सुख है । सुख वही है जिसमें पलपल में संतोष तथा आनंद मिलता है ।

शांति के समान कोई तप नहीं, संतोष से बड़ा कोई सुख नहीं, तृष्णा से बड़ा कोई दुःख नहीं दया के समान कोई धर्म नहीं, शांति का आधार साधन सामग्री पर नहीं - बल्कि संतोष और संयम पर निर्भर है । भौतिकता से सुख नहीं सुविधा मिल सकती है । अभाव, क्रोध, विसंगति क्रांन्ति को जन्म देती है । पद्यपि संतोष तथा शांति सुख

को देती है । कामनाओं से दु:ख ही मिलता है । संतोष की एक व्याख्या यह भी है - "इच्छा में आया पदार्थ मिलजाय तो उसे भी संतोष कहते हैं ।

असंतोष तथा अशुभ कर्म द्वारा संचित किया धन - सुख, शांती नहीं देसकता । रावण के पास सोने की लंका तथा अपार धन सम्पदा, बल शक्ति थी, लेकिन असंतोष के कारण उसका सर्वनाश हो गया ।

अभाव ग्रस्त होने से अकर्मण्य हो जाना - कायरता है, संतोष वहीं जहाँ प्रेम है, सत्य है, सदाचार है, शिष्टाचार है, अपने पर विश्वास है, संतोष का सागर लहराता है, वहीं सुख शांति स्मी अनमोल स्मी संतोष प्राप्त होता है । जहाँ श्रद्धा विश्वास स्मी संतोष है वहीं सुख शांति है ।

शास्त्रों का अध्यन, पठन-पाठन, सत्संग, संत समागम, पर्यटन, काव्यचिंतन, स्वाध्याय, जप-साधना, शीलता इत्यादि द्वारा सुख का उदय होता है । इसलिये शांति-सुख का मूल मानव के हृदय में है । सुख का मूल शांति, शांति का मूल संतोष संतोष का मूल हृदय में स्थिर आत्मा की पूर्णता है । सुख का केवल अनुभव ही होता है । भौतिक सुख में लीन होना कालान्तर में दु:खी बनने का आधार है । मन को निर्मल रखे, शरीर को स्वस्थ रखे, हृदय को प्रेमालु रखे, और संतोष से जीवे वही परम भक्त है । मन की वेग गति को रोकना ही मोक्ष-मार्ग में चलने का प्रथम सोपान है। मनुष्य को सबसे पहले संतोष धार्मिकजीवन से होता है । इसलिए संतोष का मूल आध्यात्मिक जीवन है ।

इत्र (सेन्ट) बेचने की चीज नहीं है, बांटने की चीज है । सुख शांति ही इत्र है । जिसे आप जितना अधिक लोगो में बांटेगे उतना ही अधिक आपकी गंध फैलेगी । जो आनंद हम प्राप्त करते हैं उसमें थकान लगती है । जो आनंद हम दूसरे को देते हैं उसमें थकान नहीं लगती । हमें जिस वस्तु की जरुरत हो वह मिलजाय तो भी समृद्धि कही जायेगी । लेकिन विना वस्तु के जो अपना कार्य हो जाय तो परम शक्ति कही जायेगी यही श्रेष्ठ संतोष है । यही संतोष का मूल है ।

*अनुसंधान पेईज नं. ७ परतुं*

**उपनयन संस्कार**

गायत्री ब्रह्म तत्वज्ञा: सम्पूज्यन्ते जनै: द्विजा: ॥

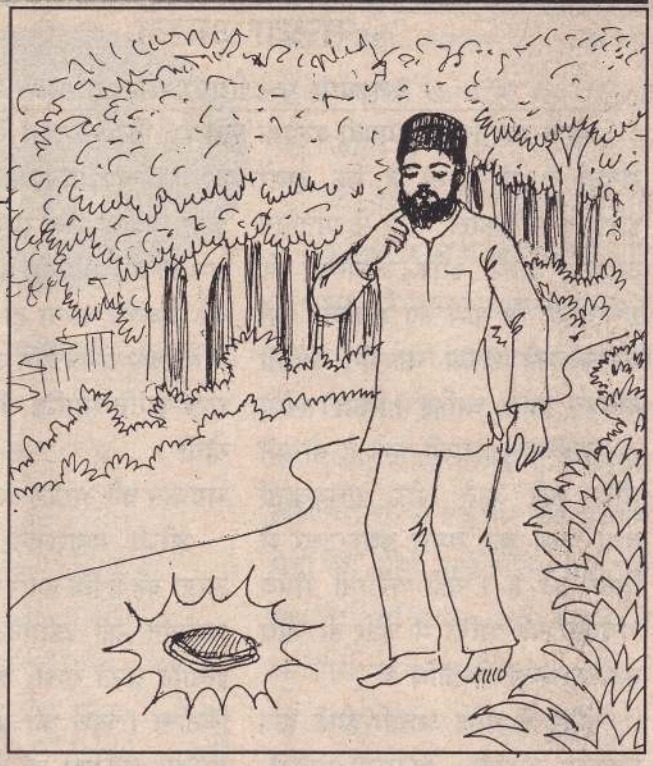
जो ब्राह्मण गायत्री को नहीं जानता वह शूद्र से भी अधिक अपवित्र होता है । परंतु जो गायत्री और ब्रह्मतत्व को जानने वाला है वह संसार में लोगों से पूजित है ।

यहाँ तक लिखा है कि जो ब्राह्मण तीन दिन तक सन्ध्या गायत्री नहीं करता वह "ब्रात्य" हो जाता है "शूद्रवत् बहिष्कार्य:" शूद्र के समान बहिष्कार करना चाहिए ।

छान्दोग्योपनिषद् में कहा गया है कि यह सम्पूर्ण चराचर जगत प्रपञ्च गायत्री ही है । किस तरह सबकुछ गायत्री हैं - इस पर कहा गया है कि वाक् समस्त भूतों का गान एवं रक्षण करती है । चतुष्पाद, षडक्षरपाद, गायत्री, वाक्, भूत, पृथ्वी, शरीर, हृदय, प्राणस्मा, षडविधा गायत्री का वर्णन है । पुनश्च सम्पूर्ण विस्व को एकपाद मात्र कहकर अन्त में त्रिपाद ब्रह्मको पृथक् कहा है । इसके अतिरिक्त पूर्व कथनानुसार गायत्री मंत्र के द्वारा सगुण-निर्गुण किसी भी ब्रह्मस्वस्म की उपासना की जा सकती है । यह सभी यज्ञोपवीत (उपनयन) संस्कार में ही निहीत है।

# इमानदारी का फल

- वी.पी. स्वामी गुरु महंत स्वामी
आत्मप्रकाशदासजी (जेतलपुर)



बहुत पहेली की बात है, धोराजी गाँव में एक गरीब मेमण रहता था। उसका नाम खान मुसा था। एकबार वह पैदल बगसरा जा रहा था। रास्ते में उसे ठेंस लगी। नीचे देखा तो बजनदार थैला दिखाई दिया। थैला खोल कर देखा तो हीरे जडित सोने के आभूषण थे। उसका मन ललचाया लेकिन तुरत ही विचारने लगा कि खुदा तो सब देखता हैं, गलत लालच आने पर विचार करने लगा और सामने बाघणिया गाँव में ग्रामप्रधान के यहाँ जाकर सम्पूर्ण वृत्तान्त बताया तो ग्रामप्रधान की दियानत बिगड गयी और कहने लगा कि इसमें से हम दोनों आधा-आधा बांट लेते हैं। लेकिन खान मुसा तो खुदा को याद करके थैला बन्द किये और उठाकर चल दिये। गाँव की सीवान में जाते समय विचार आया कि राज दरबार का कोई आदमी बगसरा गया होगा उसी की थैली गिर गयी होगी। जब उसे याद आयेगा तो अवश्य वह वापस आयेगा। यह अनुमान सत्य निकला। बगसरा से नजदीक एक घुड़सवार खूब तेजी से घोड़े को सरपट दौड़ाते हुए आता दिखाई दिया। उसे रोकते हुए खान मुसा ने पूरी स्थिति बताई तो, घुडसवार खान मुसा को साथ लेकर दरबार में इमानदारी का इनाम रानी माता द्वारा दिया जायेगा इस हेतु से साथ ले गया। लेकिन खान मुसा इनाम लेने से मनाकर दिया और सम्मानित होकर वहाँ से मुंबई गया, एक शेठ के यहाँ उसे नौकरी मिल गयी। दो-तीन दिन के बाद घूमते फिरते खान मुसा एक लीलामी करने वाले शेठ के पास पहुँच गया, वह शेठ सोने की लीलामी कर रहा था। उस जमाने में सोना बीस रुपये के भाव का था।

खानमुसा अपनी बोली साढे तीन रुपये की लगायी उससे अधिक कोई बोला नहीं तो उसे वह सोने की लकड़ी मिल गयी। उस लकड़ीको लेकर खान मुसा अपने सेठ के पास गया। ठीक उसी समय एक जौहरी वहाँ पर आया और इस सोने की लकड़ी में हीरा लटकते देखकर दुगुनी कीमत लगाई। लेकिन शेठ बहुत चालांक था, बात को बीच में से काटकर खान मुसा को साथ लेकर अपने जौहरी के पास ले गया। वह देखते ही उसकी कीमत दश हजार रुपये कहा। शेठ ने उपरा उपरी करके अन्त में बीस हजार की कीमत लगायी। और बीस हजार प्राप्त करके खान मुसा के लिए शेठ ने अलग से नई दुकान खुला दी। इमानदारी का बदला भगवान ने दिया। खूब पैसा कमाया। निवृत्त समय में खान मुसा धोराजी आकर रहने लगा। जो गरीब आते उन्हे दान देता रहता। आज भी धोराजी में उसका नाम प्रख्यात हैं।

# सन्ध्या आरती

- घनश्याम पाटडीया ( सुरेन्द्रनगर)

श्रीजी महाराज शिक्षापत्री श्लोक संख्या ६३में लिखे हैं कि हमारे हरिभक्त सायंकाल मंदिर में प्रतिदिन अवश्य जायें और उच्चस्वर में राधाकृष्ण के नाम का संकीर्तन करें प्रत्येक को संध्या कालीन आरती अवश्य करनी चाहिए । कितने लोग तो सायंकाल खाली रहते है तो भी मंदिर नहीं आते और 'ग्राम्यवार्ता तथा व्यर्थ का समय इधर-उधर में विता देतें है । यही कीमती समय भगवान की भक्ति में वीते तो जीव का कल्याण हो जाय ।

मंदिर में पांच आरती होती है । मंगला आरती, श्रृंगार आरती, राजभोग आरती, सन्ध्या एवं शयन आरती । इसमें संध्या आरती का विशेष महत्व है । संध्या आरती का दर्शन एवं श्रीजी महाराज क़ा दर्शन करने तैंतीस करोड देवता आते हैं । इस आरती के दर्शन से अनंत जन्मों के पाप जल जाते हैं । इस बात को दिव्य दृष्टि से महाप्रभु सब देखते रहते हैं इसी लिए सन्ध्या आरती में जाने की आज्ञा की गयी है ।

सन्ध्या आरती करने से जीव को सुख शांति मलिती है । आज के कलिकाल में जीव त्रिविधताप से पीडित है । जिस पीडा से शांति पाने के लिये जीव ईधर-उधर भटकता रहता है । इसी हेतु से भगवानने आज्ञा की कि इधर-उधर भटकने से अच्छा कि भगवान के दिव्य दर्शन के साथ सन्ध्या आरती का भी दर्शन होगा । व्यावहारिक सभी कार्य छोडकर सन्ध्या की आरती का दर्शन सभी को अवश्य करना ही चाहिए । इसी में महाप्रभु प्रसन्न होंगे और आत्यन्तिक सुख-शांति समृद्धि जीवन में मिलती रहेगी ।

भगवान की अखंड कथावार्ता कीर्तन

श्रीजी महाराजने वचनामृत में आज्ञा की है कि हमारे हरिभक्त अखंड भगवान की कीर्तन, धुन, कथा, इत्यादि करते रहना, व्यर्थ समय नहीं बिताना । व्यर्थ की बातें - गप्पा न मारकर भगवान के मंदिरमें जाकर, धून, कीर्तन, सत्संग, सन्ध्या आरती इत्यादि करना । मंदिर में अच्छे विचार आते है इस लिए मंदिर तो सभी को जाना ही चाहिए ।

कथावार्ता का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व संतो का है । संतो में भी अधिक प्रवृत्ति होने के कारण समय का अभाव हो गया है, फिरभी समय निकाल कर कथा-सत्संग करना चाहिए ।

कथावार्ता के लिए श्रीजी महाराजने बहुत शास्त्र हमें दिये है । वचनामृत सत्संगिजीवन, सत्संगीभूषण, निष्कुलानंद काव्य, भक्तचिंतामणी, गुणातीतानंद तथा गोपालानंद स्वामी की बातें धर्मशास्त्रों का चिन्तन तथा सन्तो की संगत जीवन को सत्मार्ग पर जाने के लिए प्रेरित करती है ।

विशेष तो यह कि जो हरिभक्त निवृत्त हो गये हैं वृद्ध है अथवा जिस किसी भाई-बहन को समय मिले तो वे अवश्य मंदिरमें जायें । वहाँ भगवान की भक्ति करें कीर्तन करे, माला फेरें । मंदिर में श्रीजी महाराज भक्तों की राह देखकर बैठे रहते है । भक्तों के कल्याण हेतु तत्पर रहते है । श्रीजी भक्ति से प्रसन्न होकर दुःख से दूर करेंगे । सुख और शान्ति मिलेगी अंत में अक्षरधाममें ले जाने के लिए स्वयं आयेंगे । समय का सदुपयोग सभी को करना चाहिए - वीता सयम पुनः आता नहीं है, इसलिए मंदिर में सन्ध्या आरती का दर्शन एवं भजन, भक्ति करके जीवन को सुधार लेना चाहिए ।

**अमदाबाद मंदिर मे परंपरागत शारदा पूजन**

समस्त श्रीहरिके प्यारे भक्त को बताया जाता कि सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के शुभ सानिध्य में विद्वान पंडितो द्वारा मंदिर के सभा मंडप में अश्विन कृष्ण अमावस्या को दिपावली के शुभ अवसर पर दि. १२-११-०४ शुक्रवार को शाम को ६-०० बजे समुह शारदा पूजन शास्त्रोक्त विधि से होगा तो इसमे भाग लेना चाहते हरिभक्त व्यापारी अपनी खाताबही-२ नंग नाम, पता, फोन के साथ स्टीकर लगाकर लाल कपडे में बाँध कर कोठार में १०-११-०४ से पूर्व देकर पक्की रसीद ले लें । *- कोठारी स्वामी*

# गुरु की खोज

- शा.स्वा. विवेकसागर गुरु धर्मस्वरूपदासजी ( नाथद्वारा )

आत्मकल्याण की चाहना प्रायः सभी मनुष्यों में होती है । लेकिन मार्गदर्शक कोई होना तो चाहिए न ? कल्याण का मार्ग बतायेगा कौन ?

आत्मकल्याण कराने वाले को शास्त्र कारोंने गुरु सब्द से उद्‌बोधित किया है । "गुरु" अर्थात् "गु" अन्धकार तथा "रु" दूर करने वाला । जो अन्धकार दूर करके प्रकाश दे उसे गुरु कहते है, पस्तुत अर्थ को स्पष्ट करने हेतु संस्कृत में कहा गया है -

*'गु शब्दस्तु अन्धकारः रु शब्द*
*स्तन्निरोधकः ।*
*अपाकरोति अंधकारः ईतं गुरुः*
*प्रचक्ष्यते ॥*

जीवन में अज्ञानस्मी अंधकार को दूर करके जो ज्ञान स्मी प्रकाश फैलाये उसे गुरु कहते हैं ।

जीवन में सच्चा गुरु मिले तो ही मोक्ष का मार्ग खुलता है । सच्चा गुरु स्वजीवन में भौतिक सुख का भोग देकर शिष्यों को सही दिशा एवं सद्‌ज्ञान देता है । यथार्थ ज्ञान सच्चे गुरु के पास से ही मिलता है । जीवन में यदि खराब गुरु मिल गया तो शब्दार्थ के वैपरीत्य को समझा कर गलत मार्ग पर ले जाता है ।

एकबार एक ढोगी बाबा एख राजा के पास गया, पूरा शरीर में भभूति लगाये थे । गला में तथा हाथ में स्द्राक्ष की माला पहने थे । लंबी जटा "घाटोटपो भयंकर" जैसा लग रहा था । एकहाथ में कमंडलु एक हाथ में चिमटा लिये हुए वह बाबा राजा के पास पहुंचकर दो-चार अच्छे शब्दों को बोलकर तथा आशीर्वचन बोलकर राजा को खुश कर दिया। बाद में अपनी इच्छित विचार कहने लगा । तुम मेरा चेला बन जा । राजा ने कहा हाँ बाबा मैं आपका चेला बन गया । बाबा ने राजा को एक मंत्र दिया - और कहा कि इसी का जप किया कर ।

*शुकलाम्बरं धरं देवं शशिवर्णं*
*चतुर्भुजम् ।*
*प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्व*
*विघ्नोपशान्तये ॥*

श्वेत वस्त्र धारण किये हुए, चन्द्रमां के समान कान्तिवाले, चार भुजा वाले, प्रसन्न मुख वाले, सर्व विघ्न की शांति के लिए भगवान विष्णु का ध्यान करना चाहिए । इतना इस मंत्र का सुन्दर अर्थ है । नाना प्रकार से बाबा ने राजा के मन में भाव भर दिया । स्वात्मीय बना लिया । और कहा कि देखो बच्चे ? कोई भी पंडित आवे या विद्वान आवे तो सही उसका अर्थ मत समझना, अन्यथा ढगे जाओगे । राजा तो उसकी बाणी में फंस गया। और हाँ में हाँ करता गया । देखो राजन् ? अब इसका विशिष्ट अर्थ करते हैं - जिसने शुक्ल वस्त्र धारण किया हो ऐसा स्मया तो कैसा है ? चन्द्रमां के समान रंग वाला है । विष्णुस्म होने से व्यापक चार भुजा २-५ चार-चार आने का बना हुआ, इस स्म का जो ध्यान करे उसका मुख प्रसन्न हो जाता है और उसके सभी दुःख दूर हो जाते है । यह अर्थ सुनकर राजा खूब प्रसन्न हुआ उसे खूब धन देकर अपने राज्य में रख लिया ।

कुछ समय बाद राजदरबार में एक पंडित आये ! राजाने बाबा के बताये श्लोक का अर्थ पूछा तो पंडितजीने यथार्थ श्लोक का अर्थ किये, लेकिन राजा मानने को तैयार नहीं पंडित को ही मूर्ख कहने लगा । इस प्रकार उसके राज्य में जितने पंडित आते सभी

को इसी प्रकार अपमानित करके वापस कर देता । सभी अपमानीत होकर वापस चले जाते ।

एक दिन तो ऐसा हुआ कि एक पंडित राजा के पास आये - उन से भी इस श्लोक का अर्थ पूछा तो उन्होंने भी सच्चा अर्थ कर दिया लेकिन नहीं माना और कहा कि इसका सच्चा अर्थ मेरे गुरुजी ही कर सकते है । पंडितजी ने कहा आपके गुरुजी कहा रहते है, आप उनका दर्शन कराईये, राजा ने पंडित के पास भेजा और पंडितजी आग्रह पूर्वक बाबा की सेवा में रहने की बात किये तो बावा तैयार हो गया । बाबा की खूब सेवा पंडितजीने की । प्रसन्न होकर बाबाने पूछा बोलो तुमको क्या चाहिए ? पंडितजीने कहा - एक श्लोक है जिसका अर्थ मुझे नहि आता, उसका अर्थ आप समझा दीजिए बाबा गलत अर्थ के साथ ही उस श्लोक को समझाने लगा ।

पंडितजी बेश बदलकर राजा के पास गये, जब राजा ने श्लोक बोला और अर्थ पूछा तो उन्होने बाबा वाला अर्थ कर के बताया । राजा खुश हो गया और कहने लगा कि आपही एक पंडित है ।

आज तक इसका अर्थ कोई कर नहीं सका । आपकी क्या इच्छा है मांगो ? पंडित जी बुद्धिमान थे उन्होंने कहा आप मेरे पास संस्कृत का अभ्यास करें ? राजा ने कहा ठीक है । बाद में पंडितजीने राजा को तीन वर्ष तक संस्कृत, व्याकरण, साहित्य इत्यादि शास्त्रों को पढाया । बाद में "शुक्लांबरं धरं" का अर्थ पूछा तो उन्होने सच्चा अर्थ किया । आपने मुझे सच्चे ज्ञान नेत्र प्रदान किये है । आज तक अज्ञान के कारण कितने पंडितो को अपमानित करता रहा । इस प्रकार कहते हुए पश्चाताप करने लगा ।

इसके बाद राजा पूर्वढोगी बाबा को जो सम्मान के साथ अनर्थ करवा रहा था बेईज्जत करके राज्य के बाहर निकलवा दिया । पंडितजी को अपना गुरु बनाकर राज्य मे रखा ।

जब तक मानव को सच्चा गुरु नहीं मिले या सच्चा ज्ञान न मिले तो लौकिन ज्ञान प्राप्त ही नहीं कर सकता तो उसे परमार्थ ज्ञान कैसे सम्भव होगा ? सच्चा ज्ञान तो सच्चे गुरु के पास ही मिलता है ।

इसीलिए तो कहा है कि -

*गुरु करवा तो ज्ञानी करवा,*
*सत् असत् ने जोई ।*
*बडद लेवो तो खेड़ी लेवो*
*डोबु लेवुं दोई ॥*



**अमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में दिपावली के उपलक्ष्य में शुभ कार्यक्रम**

श्री हनुमानजीका पूजन-आरती आश्विन कृष्ण-१४ को दि. ११-११-२००४ गुरुवार शाम को ६-४५ बजे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजके करकमलो से संपन्न होगा ।

आश्विन कृष्ण अमावस्या दीपावली, शनिवार दि. १२-११-२००४ को अन्नकुटोत्सव दर्शन तथा समूह मे खातावही शारदा पूजन लक्ष्मीपूजन शाम ६-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज के कर कमलो से विद्वान विप्रो द्वारा अमदावाद मंदिर सभा मंडपमें संपन्न होगा ।

सत्संग बालवाटिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

## मुठ्ठी बन्द नहीं करनी चाहीए

- शास्त्री हरि स्वामी ( गांधीनगर)

मित्रों यह बात जैसी तैसी नहीं है । इसकी महिमा कम नहीं है भले छोटी है । इसका सार बड़ा है । इसका महत्व इसलिए भी कि श्री स्वामिनारायण भगवान के वैराग्य मूर्ति संत निष्कुलानंद स्वामी द्वारा कही गयी है । तो यह वार्ता बडी महत्व की है या नहीं ? इसको ध्यान से सुनिये -

एक मदारी था, उसका काम क्या हो सकता है यह आप जान सकते है । कोई मदारी सर्प पकड कर लाता और पेटारी में बन्द करके गाँव-गाँव घूमकर बांसुरी बजाकर उस सर्प को नचाता और उससे पैसा मिलता जिससे घर का गुजरान चलता । इसी प्रकार कोई मदारी बन्दर को पकड़कर लाता और समाज में लकडी दिखाकर नचाता और सभी बड़े प्रेम से उसे देखते और खुश खुश हो जाते बाद में पांच पचीस देते जिससे उसके परिवार का खर्च चलता । लेकिन आप सबको यह ख्याल होना चाहिए कि सर्प या बन्दर पकड़ना कितना कठिन है । इस डाल से उसडाल इस मकान से उस मकान दौड़ धूप करने वाले को पकड़ना केवल मदारी का सामर्थ्य है । ऐसे चंचल बन्दर को भी पकड़कर बांधकर अपने अनुकूल बनाकर उसे नचाता रहता है । ऐसा ही एक मदारी जंगल में बन्दर पकड़ने गया वहाँ बन्दरों का झुन्ड देखकर निश्चय किया कि इसमें से अवश्य एक-दो बन्दर हाथ में आयेंगे । वह अपना प्रयोग प्रारम्भ किया । उसके पास एक धातु का घड़ा था घड़ा का मुंह पतला था । उस घडे में चना भर दिया । और खुद छिपकर बैठ गया । इतने में घड़े में चना देखकर पाँच सात बन्दर पेड़ से नीचे उतर आये, सभी ने चना के लिए धड़ा में हाथ डाला और चना से मुठ्ठी भर लिये, मुठ्ठी बन्द थी सभी एक साथ हाथ को बाहर खींचने लगे लेकिन किसी का हाथ बाहर निकला नही - क्योंकि जब हाथ डाले थे तब हाथ खाली था लेकिन जब निकालने लगे तो सभी की मुठ्ठी बन्द थी अब हाथ कैसे निकले ? आपस में बूमाबूम करने लगे इतने में मदारीने अपना जाल फेंक कर २-३ को जाल में फंसा लिया । और जिन्दगी भर मदारी के पराधीन हो गये । मदारी उन्हे पकड़कर अपने घर ले आया । उन सभी को सिखाया नाचने लगे और मदारी के काम में आने लगे । इसीलिए यहवार्ता सुनाते हुए स्वामी निष्कुलानंदजी कहते हैं कि -

*मुठ्ठी वाणी जेम भर कटे*
*चपटी चना ने काज ।*
*निष्कुलानंद फंद पडयो गडे.*
*परवश थयो पशुराज ॥*

मुक्त मन से इस वृक्ष से उस वृक्षपर फिरने वाले मन इच्छित फल-पत्ता खाने वाले बन्दर भी बन्धन में आ गये । इसलिए सुखी होना हो तो मन के अनुसार चलना छोड़ना होगा । जैसे बन्दर ने अपनी चन्चलता के कारण ही बन्धन में फंस गये ऐसे ही हम अपनी चंचलता नहीं छोडेगे तो संसार के बन्धन में फंस जायेगे इसलिए सुखी होना होतो माया के बन्धन से मुक्त होना होगा और वह तभी सम्भव है जब अपने इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण के बताये मार्ग पर चलकर भजन, भक्ति, सत्संग, कथावार्ता करके भगवान को प्रसन्न कर ते रहेंगे तो ।

# सत्संग समाचार

## अहमदाबादमें जलझीलणी का उत्सव

आद्य आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराज के समय से उल्लास के साथ भगवान गणेशजी की रथयात्रा अहमदाबाद मंदिर से प.पू. भावी आचार्य १०० लालजी महाराजश्री तथा प.पू. बाल लालजी महाराजश्री की उपस्थितिमें पू. महंत स्वामी, संत, उत्सवी मंडल तथा अनेक हरिभक्तों के साथ १-१५ बजे श्री नरनारायणदेव के साथ श्री गणपतिजी का पूजन के साथ प्रारम्भ हुई। प.पू. लालजी महाराज तथा प.पू. बाल लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में सभी को खूब आनंद का अनुभव हो रहा था।

मंदिर से लांबेश्वर पोल, रीलीफ रोड, तथा वहाँ से बाहन द्वारा नारायणघाट मंदिर में पदार्पण किया गया। वहाँ प.पू. बाल लालजी महाराजश्री ने गणपति विसर्जन की पूजन विधी की। बाद में सभा में मुखपाठ कीर्तन बोलाकर सभी को मंत्र मुग्ध कर दिया था। सायंकाल नारायणघाट से कालुपुर मंदिर वापस रथयात्रा के साथ लालजी महाराज पदार्पण किये। उत्सवीयाजन कीर्तन-धून करके लालजी महाराज को प्रसन्न किये। मंदिर साथ में आये हुए सभी को केला का प्रसाद वितरण किया गया। *– को. सत्यप्रकाशदासजी*

## प्रसादी के महादेवजीका श्रावण मासमें रुद्राभिषेक

विष्णो शिवो गणपति, पार्वती च दिवाकरः।
एता पूज्य तथा मान्या, देवता पंच मामकैः॥

पंचदेवो के इस आदरणीय शब्दों का स्मरण करके भगवान श्री स्वामिनारायण ने नवा वास में अनेको बार पदार्पण करके उस भूमि को अत्यन्त पवित्र कर दिया था, जिस भूमि पर आचार्य प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजने भगवान मुक्तेश्वर महादेव की स्थापना की थी। जो अहमदाबाद मंदिर के मुख्य दरवाजे के सामने महादेव के बाड़ा में आजभी दर्शन होता रहता हैं।

प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से पवित्र श्रावण मास में कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के दिन प्रसादी के मुक्तेश्वर महादेव में लघुरुद्राभिषेक का कार्यक्रम किया गया। प्रातः काल प.पू. लालजी महाराजश्री एवं महन्त स्वामी तथा सन्त मंडल प्रसादी के इस मंदिर में पधारकर विद्वान पंडितों द्वारा वेद विधि से षोडसोपचार पूजन-अर्चन करके रुद्राभिषेक किये थे। तथा सभी लोग भगवान आशुतोष की कृपा के भाजन बने थे।

भगवान श्री स्वामिनारायण इस महानगर श्रीनगर में अनेकों बार पदार्पण किये जिसमें नवा वास की भूमि प्रभु के चरण रज से अति पावन हुई है। यहाँ मुक्तेश्वर महादेव की स्थापना आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराजने की थी। कांकरिया में आद्याचार्य अयोध्याप्रसादजी महाराजने अपने कुल देव को प्रतिष्ठित कर के अपने सत्संग समाज को दुःख से निर्मूल करके सुख समृद्धि प्रदान किये। नरनारायणदेव के आदिपीठाधीश्वर आचार्य महाराजश्री प्राचीन निवास स्थान असारवा (स्वामिनारायण बाग) में कष्टभंजन देव की स्थापना करके कुलदेवता को धर्मकुल के साथ ही प्रतिष्ठित किया है। आज उसी निवास स्थान पर "श्री सहजानंद गुरुकुल" शिक्षण एवं धर्म की सेवा में तत्पर है।

साबरमती नारायणघाट में भी आद्याचार्य नें श्री कष्टभंजन देव की स्थापना की है। धर्मकुल देवता भगवान श्री कष्टभंजन देव आजभी सभी की मनोकामना पूर्ण कर रहे है।

आश्विन मास की कृष्णपक्ष चतुर्दशी को हनुमान जयंती का धार्मिक उत्सव करने हेतु प्रतिवर्ष प.पू.ध.धु. आचार्य माहाराजश्री इन प्रसादी के स्थानों मे पूजन विधि करने हेतु पदार्पण करते हैं।

हम सभी लोग भी धर्मकुल देवता की श्रध्धापूर्वक दर्शन पूजन करके एकान्तिक भक्ति को दृढ करें।

*–को. सत्यप्रकाश स्वामी*

## श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर

प.पू. भावी आचार्य १०८ लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से हिंमतनगर मंदिरमें साबरकांठा जिला के युवक मंडल के संचालकों की एक सभा की गयी। जिले के प्रत्येक युवकों ने तथा सत्संगियो ने भाग लिया।

धुन-कीर्तन के साथ सभा प्रारंभ हुई। प्रत्येक संचालको ने अपना परिचय दिया तथा नरनारायण युवक मंडल की प्रवृत्तियों का लेखाजोखा ब्बताया। सभी सभागत संचालक मंडल ने एक सूत्र बद्ध होक र एक मत से यह उद्घोषित किया कि हम सभी श्री नरनारायण देव के आज्ञांकित सैनिक हैं हमारा यह कर्तव्य है कि गाँव गाँव में भगवान स्वामिनारायण के सर्वजीव हितावह सन्देश को पहुंचाये

और सत्संग का विस्तार करें ।

युवक मंडल के इस निष्कर्ष का अनुशरण करके इडर तथा प्रांतिज मंदिर के महंत स्वामी के निर्देशानुसार युवक मंडल की एक सभा का आयोजन किया गया । प्रांतिज की सभा में महंत स्वामी माधवदासजी तथा विसनगर से आये हुए उदयनभाई महाराजा ने उत्साह बर्धक प्रवचन करके वहाँ के युवकों में नयी प्रेरणा भर दी थी । हिंतनगर मंदिर से प्रति एकादशी तथा प्रति रविवार को सत्संग सभा का आयोजन किया जाता है । यही युवक मंडल के सदस्यगण प्रत्येक गाँव में घूमकर नयी प्रेरणा देकर दूसरे नौ युवानों को तैयार करते है । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से सत्संग का विस्तार उत्तरोत्तर हो रहा है ।

*- महंत स्वामी हिंमतनगर*

**श्री स्वामिनारायण मासिक पत्रिका (गुजराती, हिन्दी, अंग्रेजी)**

अक्टूबर २००४ से बदला हुआ शुल्कदर भारत में

वार्षिक शुल्क : ५०/-

वंशपरंपरागत : ५००/-

विदेश में : $ 100

छुटक नकल : ५/-

तंत्री तथा संपाक

श्री स्वामिनारायण

( गुजराती, हिन्दी, अंग्रेजी )

**श्री सहजानंद सेकेन्डरी तथा हायर सेकेन्डरी स्कूल**

( अंग्रेजी माध्यम )

व्यायाम तथा रमत गमत की स्पर्धा में बोर्ड स्तर पर विद्यालय के बालकों ने उत्तम दिखाव करके सिद्धि प्राप्त किया ।

१. कु. मानसी व्यास धो.११ राज्य कक्षा की टेनिस स्पर्धा में पसन्द की गयी । २. स्कूल की कुमार टीम तथा कन्या टीम अलग अलग जूथ में १९ वर्ष से नीचे की बच्चो में कबड्डी स्पर्धा में बोर्ड चेम्पीयन रही । ३. स्कूल की खो खो टीम १९ वर्ष के जूथ में चेम्पीयन रही । ४. स्कूल की कुमार टीम जिला स्तर पर खो खो में रनर अप का स्थान प्राप्त किया । राज्य कक्षा में पसंद खेलाडी-सचिन बाबर, शालीन जोषी, श्रीजीटकुस्म एवं हसन अली । ५. राज्य कक्षा में खेलने वाले विद्यार्थियों में कु. उर्वि मेहता कु खूश्बू मेहता, कु. रिद्धि बाबर का चयन किया गया है । इनका तालीम कैम्प में नाम ले लिया गया है ।

इस स्कूल के व्यायाम शिक्षक श्री प्रकाशभाई गज्जर तथा विद्यार्थी भाई बहनों की सिद्धि के लिये प.पू. लालजी महाराजश्रीने आशीर्वाद भेंजा है ।

*- प्रीसीपाल*

सहजानंद शिशु मंदिर तथा श्री सहजानंद प्राथमिक विद्या मंदिर

( गुजराती माध्यम )

इस विद्यालय के विद्यार्थी भाई बहनें सी.आर.सी. कक्षा में महत्व की सिद्धि प्राप्त की है ।

प्रथम स्थान : सेन्द्रिय खाद : कु. निशी सुरती, हरष पटेल, हर्षिल पटेल । गणितिक नमूना : कु. श्रुति पटेल, निसर्ग सोनी, बिमल जालाणी । ओजोन वायु : कु. अंजन देसाई कु. मोक्षदा पुजारा ।

फाईवर ओष्टिक : सुकानी शाह कु. जुही शाह ।

द्वितीय स्थान : उर्जा पिरामीड : कु. भूमिभट्ट, पार्थ पटेल । रसी करण : तरंग मालाणी, कु. भूमि पटेल ।

उपरोक्त विद्यार्थियों को लालजी महाराजने हार्दिक आशीर्वाद भेंजा हैं और कहा है कि इन सभी बच्चों की जिला तथा राज्य स्तर वृद्धि हो ।

*- सुरेखा बहन - आचार्य*

**श्री स्वामिनारायण मंदिर छपैया**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा महंत ब्र. रामकृष्णानंदजी तथा महंत स्वा. वासुदेवानंदजी की प्रेरणा से माधवपर के जो वर्तमान में लंडन निवासी हैं भक्त खीमजी शामजी, जयंती शामजी, धर्मेन्द्र शामजी तथा उन के परिवार के सभी सदस्य अपने पिता के मोक्षार्थ श्री घनश्याम बाल लीला चरित्र का त्रिदिवसीय कथा का आयोजन किया गया था । शा.स्वा. हरिस्वरूपानंदजी वक्ता पद पर विराजमान होकर सभी को कथा का रसपान कराये स्वा. भक्तिप्रकाशदासजी ने सभा संचालन किया । श्रावण मास के इस भक्ति सत्संग में अहमदाबाद से प.भ. मनुभाई, प.भ. जशुभाई, प.भ. रतीलाल विशेष रूप से उपस्थित रहे । सहस्त्राधिक हरिभक्तों ने लाभ लिया ।

परंपरागत जन्माष्टमी उत्सव हजारों हरिभक्तों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ । जरपला, वीरमगाँव, बालासिनोर, राजकोट, कलकता, वीसावाडीया, भादरा, बोटाद, सुरेन्द्रनगर, सूरत, जूनागढ़, वापी, मुम्बई, नवसारी इत्यादि स्थलों से हजारों की संख्या में भक्तजन भाग लिये थे । छपैया के आसपास के गाँव वासियों ने तथा धर्मकुल के लोग पधारे थे । जन्माष्टमी का पर्व कीर्तन, धुनि रासगर्वा इत्यादि भक्ति

मय वातावरण से परिपूर्ण था । श्रीहरि के सांनिध्य में सन्तो तथा हरिभक्तों ने यह उत्सव मनाया ।

*- शा.स्वा. भक्तिप्रकाशदासजी*

### कांकरिया-रामबाग मंदिर

यह प्रसादी की भूमि श्रीहरि के चरण रज से पुण्य भूमि हो गयी है । कांकरिया के क्षेत्र में श्रीहरि स्वयं चौरासी गाँवो के ब्राह्मणों को भोजन कराये हैं । आज से २०० वर्ष पूर्व आद्याचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्रीने महाप्रतापी बाल स्वरूप कष्टभंजन देव तथा चरणारविन्द की प्रतिष्ठा की थी । इस तीर्थ भूमि पर प.पू.ध.धु. आचार्यश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने सिद्धेश्वर महादेव को प्रतिष्ठित किया है । महातीर्थ स्व कांकरिया मंदिर में महंत स्वा. गुरुप्रसाददासजी तथा कोठारी आनंदप्रसादजी की प्रेरणा से गंगाजल, गन्ने के रस, दूध, इत्यादि से अभिषेक तथा षोडशोपचार पूजादि कार्य प.पू. १०८ लालजी महाराश्री ने स्व हस्त से श्रावण की अमावस्या को संपन्न किया। २०० कमल तथा सवा लाख बिल्वपत्र चढ़ाकर प्रसादस्व में हजारों हरिभक्तों को दिया । इस कार्य क्रम के यजमान प.भ. शेठश्री हरिकिशनदास पीताम्बरदास ठक्कर तथा उनके परिवारने लाभ लिया । कार्यक्रमका आयोजन महंत स्वामी की देखरेख में सन्पन्न हुआ । कृष्णपक्ष की सप्तमी को सिद्धेश्वर महादेव का होमात्मक यज्ञ तथा महाभिषेक का आयोजन किया गया।

प.पू. भावि आचार्य लालजी महाराजने नारियल का हवन करके पूर्णाहुति की । महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी ( कालुपुर मंदिर) महंत आत्मप्रकाशदासजी ( जेतलपुर) तथा न.ना.देव के पुजारी ब्र. राजेश्वरानंदजी तथा अन्य मंदिरो के महंत संत इस प्रसंग पर उपस्थित थे । पूर्णाहुति सभा में प.पू. लालजी महाराज ने होमात्मक स्द्रयाग की महिमा बताकर सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । भोजनादिक व्यवस्था मंदिर द्वारा की गयी थी ।

मंदिर में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव बडे धूम धाम से मनाया गया । मध्य रात्रि में जब भगवान का प्राकट्य हुआ उस समय सन्त वृन्द तथा बड़ी संख्या में हरिभक्तों ने इस उत्सव का दिव्य लाभ लिया । जन्मोत्सव के बाद सभी को पंचामृत तथा पंजीरी वितरण करके प्रसाद का लाभ दिया गया ।

*-परेश भगत*

### जयपुर राजस्थान के युवकों का सत्संग शिबिर

प.पू.ध.धु. आचार्यश्री महाराजकी आज्ञा से राजस्थान देश में सत्संग प्रवृत्ति का विस्तार हो रहा है । प.पू. भावी आचार्य लालजी महाराजश्री द्वारा जयपुर ( राज.) के युवानों के लिए सत्संग शिबिर का आयोजन किया गया था । यह शिबिर जयपुर से २०० कि.मी. दूर सालासरतीर्थ में आयोजित किया गया था । दिनांक ८/९-८-०४ को दो दिन के इस शिबिर में करीब १५० युवा सत्संगी उपस्थित रहे । प.पू. लालजी महाराजश्रीने दो दिन के लिये अहमदाबाद से पधारकर सत्संग शिबिरार्थियों को आनंदित किया था । जेतलपुरधाम गुरुकुल से स.गु. शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी तथा संतमंडल इस सत्संग सभा में उपस्थित होकर कथा प्रवचन एवं प्रश्नोत्तर का आयोजन करके युवा वर्ग को उत्साहित किया था । विसनगर के उदयनभाई महाराजाभी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे ।

सत्संग शिबिर का आयोजन जयपुर मंदिर के महंत स्वा. देवस्वरूपदासजी के मार्गदर्शन में सत्संगी लोगों द्वारा किया गया । आयोजन एवं व्यवस्था अच्छी थी । राजस्थान क्षेत्र के अग्रगण्य हरिभक्त श्री मनुभाई बापूदास, मनुभाई मूलचंद्रभाई ठाकोरभाई वगैरह ने सेवा कार्यका भार लिया था । नरनारायण युवक मंडल के युवा सभ्य प्रति सोमवार को जयपुर मंदिर में तथा शहर में रविवार को हरिभक्तों के घर में सत्संग सभा करने का निश्चय किया तथा नियमित क्रिया प्रारंभ भी हो गयी है । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभाशीर्वाद से यहाँ का सत्संग उत्तरोत्तर बढ रहा है ।

*- साधु भक्तिनन्दनदास*

### षष्ठिपूर्ति महोत्सव श्रीमद् सत्संगिभूषण कथा की वीसीडी

जिसकी मधुर याद आज भी भुलाती नहीं ऐसा अद्वितीय "षष्ठि पूर्ति महोत्सव" के महत्व के प्रसंगो का यथार्थ दर्शन के बाद श्रीमद् सत्संगिभूषण शास्त्र की कथा पू. महंत शा. स्वा. निर्गुणदासजी के वक्ता पद पर सम्पन्न हुई थी । जिसका सभी भक्तों ने जागृत अवस्था में जो लाभ लिया था उसी कथा की वी.सी.डी. भाग-२४ अहमदाबाद मंदिर के साहित्य केन्द्र से प्राप्त की जा सकती है ।

**लियावर तथा सुमेरपुर (राज.) में सत्संग सभा का आयोजन**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से इस क्षेत्र में खूब विस्तार हो रहा है। दिनांक ७-८-०४ के दिन सुमेरपुर (राज.) में दोपहर के समय कनुभाईके घर में सभा का आयोजन किया गया था। रात्री सभा का आयोजन व्यावर नगर में प.भ. अस्गभाई पटेल के घर किया गया। इन दोनो प्रसंगों में इस प्रदेश में रहने वाले हरिभक्तों ने प.पू. लालजी महाराज का दर्शन करके प्रथमवार इस प्रकार का लाभ लिया और सत्संगी बने। दोनो सत्संग सभा में कथा, वार्ता, कीर्तन का आयोजन किया गया।

*- महंत के. पी. स्वामी जेतलपुर*

**श्री स्वामिनारायण जयपुर (राज.) में देवों का पाटोत्सव**

राजस्थान राज्य की राजधानी जयपुर शहर का हृदय स्थान चांदपोल बजार में श्री नरनारायणदेव देश का मंदिर है। आज से करीब नब्बे वर्ष पूर्व यहाँ के महाराजा ने अपना बंगला आचार्य महाराजश्री वासुदेवप्रसादजी को अर्पण किया था। प.पू. आचार्य महाराजश्री ने इस बंगले में मूर्ति प्रतिष्ठित करके मंदिर का रुप दे दिया। और हरिभक्त समाज को भगवान की भजन करने का एक आश्रय मिल गया। जयपुर में रहते गुजरातियों तथा राजस्था के श्रद्धालु भक्तजन को प्रतिदिन मंदिर में सेवा पूजा-देव दर्शन तथा कथा प्रवचन एवं सत्संग का लाभ मिल रहा है। आज से एक वर्ष पूर्व महंत स्वामी नारायणस्वरूपदासजीने इस मंदिर का जीर्णोध्धार किया और हरिभक्तों के रहने की सुदृढ व्यवस्था भी की। विशाल सभा मंडप का निर्माण भी हो गया है। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरदह.हाथों से पुनः प्राणप्रतिष्ठा विधि हुई। वर्तमान में इस तीर्थ स्थान में आने वाले हरिभक्तों को ए.सी. रूम की व्यवस्था भी उपलब्ध हो गयी है। दिनांक ३-९-०४ के दिन महंत शास्त्री स्वा. देवस्वरूपदासजी (गु. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी) के महंत पद पर प्रथम पाटोत्सव का आयोजन किया गया। प.पू. लालजी महाराजश्री इस तीर्थ धाम मे दो दिन तक निवास किये। जहाँ रहकर सत्संगियों को दर्शन का लाभ दिये। पाटोत्सव के यजमान जयपुर निवासी प.भ. श्री ठाकोरभाई पटेल तथा परिवार के लोग थे। महंत शा.निर्गुणदासजी (कालुपुर मंदिर) शा.पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) वडताल धाम के ट्रस्टी श्री घनश्यामप्रकाशदासजी इत्यादि अग्रगण्य सन्त इस प्रसंग पर उपस्थित थे। प्रतिष्ठा महोत्सव की तरह हरिभक्त बड़ी संख्या में उपस्थित होकर पाटोत्सव मनाये। महाभिषेक, समूह महा पूजा, सत्संग कथा, वार्ता, धुनि-कीर्तन इत्यादि कार्यक्रमो का आयोजन किया गया। महापूजा विधि शा. ईश्वरजीवन दासजी (महंत स्वा. धरियावद) द्वारा सम्पन्न हुई।- *साधु भक्तिनंदनदासजी*

**श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर सेक्टर-२३ में अधिक मास का उत्सव सम्पन्न**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा शा.स्वा. हरिकेशवादसजी की प्रेरणा से अधिक श्रावण मास में प्रतिदिन एक घन्टा जप यज्ञ का आयोजन किया गया। जपयज्ञ की समाप्ति के दिन वेदोक्त मंत्रो से ठाकुरजी का अभिषेक किया गया।

हिंडोला उत्सव भी धूम धाम से मनाया गयाँ। नाना विध सामग्रियों से हिंडोला को सजाकर भगवान को झूंले में झुलाया गया था।

श्रावण मास के आरंभ में श्रीमद् भागवत सप्ताह का भक्तिरस संपूर्ण आयोजन किया गया। कथा के अवसर पर जन्मोत्सव, गोवर्धन उत्वसव, इत्यादिको भी धूमधाम से मनाया गया। कथा के यजमान प.भ. हसमुखभाई चौहाण थे। श्रावण मास में एकादश स्कन्ध में वर्णित दत्तात्रेय के २४ गुरु के कथा का सभी को रसास्वाद मिला था। शा.स्वामी अपनी रसीली शैली में सभीको सरला वित कर दिया था। आस पास के हरिभक्तों ने इस कथा का विशेष लाभ लिया था।

*- कोठारी बाबुभाई जे. पटेल*

**वहेलाला मंदिर**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वा. चैतन्यमुनीदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में २२-८-०४ से ता. २६-८-०४ पर्यंत पंचदिनात्मक श्रीमद् भागवत सप्ताह का आयोजन किया गया था। स.गु. घनश्याम स्वामी (नारायणघाट मंदिर) के शिष्य पी.पी. ने कथा प्रचन लाभ दिया था।

अधिक श्रावण तथा श्रावण मास के धार्मिक दिनों में ठाकुरजी के हिंडोले को उत्साहपूर्वक मनाया गया। दिनांक ११-८-०४ की रात्रि को ८ से १२ बजे तक बायड के हरिभक्तों ने धुनि-कीर्तन का आयोजन किया था।

*- गोरधनभाई वी. सीतापरा*

**पवित्र अधिक मासमें ता. १५-८-०४ के दिन दीपावली (अधिक श्रावण वद-३०) का अन्नकूट महोत्सव धूमधाम से मनाया गया**

श्री नरनारायणदेव के अन्नकूट के यजमान पद का प.भ. डॉ. कनुभाई इन्जिनीयर परिवार के साथ लाभ लिया था। श्री राधाकृष्णदेव के अन्नकूट के यजमान पद का प.भ. चोकसी मगनलाल लीलाधर परिवार के साथ लाभ लिया था। श्री धर्मभक्ति हरिकृष्ण महाराज के अन्नकूट के यजमान पद का अ.नि. भालजा साहब (ह. डॉ. हर्षदभाई झिंझुवाडीया)ने लाभ लिया था। श्री बालस्वरुप घनश्याम महाराज के अन्नकूट के यजमान पद का प.भ. बाबुभाई मणीलाल शाह प्रांतिजवालेने लाभ लिया था। श्री रंगमहोल घनश्याम महाराज तथा हवेली के श्री घनश्याम महाराज के अन्नकूट के यजमान पद का प.भ. चन्द्रहास रसीकलाल देरासरी (ह. बकुलाबहन)ने लाभ लिया था।

*- कोठारी स्वामी ब्रह्मविहारीदासजी*

**मकारवाड से जेतलपुर पदयात्रा**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा प.पू. लालजी महाराजकी आज्ञा से शा. रामकृष्णदास तथा श्रीजी स्वामी की प्रेरणा से भाद्रमास शुक्ल पक्ष पूनम के दिन नरनारायणदेव युवक मंडल के ४१ युवा सभ्यों ने श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके जेतलपुर धाम में रेवती बलदेव हरिकृष्ण महाराज का दर्शन करके श्रीहरिकी प्रसन्नता प्राप्त किये थे। *- डाह्याभाई चौधरी मकाखाड*

**कर्म शक्ति (नवा नरोडा) मंदिर**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से यहाँ मंदिर के स्वा. भक्तिनंदन दासजी की प्रेरणा से जन्माष्टमी की रात्रि को विशाल सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। युवा सत्संगी भक्तों ने सत्संग को लक्ष्य यमें रखकर एक नाटक को प्रस्तुत किया था। सत्संग के विविध विषयों पर प्रश्नोत्तरात्मक कार्यक्रम तथा कथा वार्ता, धुनि, कीर्तन इत्यादि का भी आयोजन किया गया था। धुनि कीर्तन के बाद मध्यरात्रि में भगवान श्री कृष्ण के प्राकट्य का उत्सव धूम धाम से मनाया गया।

*- गोरधनभाई वी. सीतापरा*

**वडु गाँव के हरिभक्तों की मूलीधामकी पदयात्रा**

ता. २२-८-०४ के दिन वडुगाँव के नरनारायणदेव युवक मंडल के युवानों तथा बड़ो का एक संग श्रीहरि द्वारा स्थापित मूली मंदिर में विराजमान श्री राधाकृष्ण देव हरिकृष्ण महाराज के दर्शनार्थ प्रयाण किया था।

संघ के विदाई प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराज सन्तों के साथ आशीर्वाद देने हेतु पधारे थे।

मंदिर में ठाकुरजी की आरती करके प.पू. लालजी महाराज सभा में विराजमान हुए थे। पदयात्री भक्तोंने पूजन आरती करके प.पू. लालजी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त किया था। संघ के रथ को प.पू. लालजी महाराजने प्रस्थान कराया था। १०वें दिन पदयात्रियोने भगवद्धाम मूली में पदार्पण किया तथा श्री राधाकृष्ण देव श्रीहरिकृष्ण महाराज का दर्शन करके धन्यता का अनुभव किया था। वहाँ के महंत स्वामी तथा सन्त काफी प्रसन्न हुए थे। *- प्रवीणभाई पटेल*

## मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

**मूलीधाम में हिंडोला दर्शन**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में भगवान श्री राधाकृष्ण देव, हरिकृष्ण महाराज के सानिध्य में भव्य हिंडोला का उत्सव पूरे एक मास तक नये-नये ढंग से संपन्न किया गया। पर्व के पांचदिन तक एक ही साथ में बारह हिंडोले प्रसादी के हवेली में पधराये गये थे। कलात्मक हिंडोलो की रचना महंत स्वमी मुकुन्दप्रसाददासजी की देख रेख में बनाये गया था। के.पी. स्वामी, नरोत्तम भगत, हरिप्रसाद स्वामी, नंदकिशोर स्वामी, पंकजभाई परीख तथा रतनपर के युवानों ने रचनात्मक कार्य करके श्रीहरि की प्रसन्नता प्राप्त की। *- खोडुभा स्वा. म. मूली.*

**स्वामिनारायण मंदिर रतनपर (सुरेन्द्रनगर)**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की सूचना से तथा मूली मंदिर के महन्त स्वामी की प्रेरणा से रतनपर मंदिर में अधिक श्रावण मास तथा श्रावण मास में प्रतिदिन नूतन कलात्मक हिंडोला तैयार करके ठाकुरजी को झुलाया गया। पर्व के दिनों एक ही साथ में इक्कीस कलात्मक हिंडोला बनाकर भगवान को झुलाया गया। हरिभक्तलोग इसका आनन्द लेकर धन्य धन्य हो गये। कालूभगत, पंकजभाई ब्रह्मचारी सूर्यप्रकाश तथा युक मंडल के सभ्यों ने हिंडोलों का निर्माण करके महाप्रभु की प्रसन्नता प्राप्त की। *- बाबुभाई एस. पटेल*

**शियाणी (मूली) मे सत्संग सभा**

छोटे से गाँव शियाणी में श्रीहरि अनेकोवार आये थे, उस गाँव में तथा

आसपास के गाँवो में मुमुक्षु हरिभक्तों द्वारा विशाल सभा का आयोजन किया गया । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मूली महंत की प्रेरणा से भक्ति स्वामी ब्रह्मचारी स्वामी यहाँ पधारकर सत्संग सभा, कथा, वार्ता करके सभी को आनंदित किया । सभा के यजमान प.भ. सी.टी. पटेल थे । कथावार्ता से सत्संग में दृढता का भाव आया है । *- घनश्यामभाई*

### भलगामडा (मूली) मंदिर में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से भलगामडा में एक विशेष सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । महंत स्वामी तथा मूलीधाम के सन्तो द्वारा कथा-कीर्तन धुनि का आयोजन किया गया । सत्संग सभा को इसका विशेष लाभ मिला प.भ. सजुभा राणा ( तावी ) इस सभा में पधारे थे । भलगामडां तथा आसपास के सत्संगी कुटुम्बियों ने भक्ति भजन का लाभ लिया था । *- हकूभा*

### सुरेन्द्रनगर मंदिर में रमणीय हिंडोला दर्शन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा मंदिर के महंत स्वा. प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से पवित्र श्रावण मास पर्यन्त हिंडोला दर्शन का रमणीय कार्यक्रम सम्पन्न हुआ दो मास पर्यन्त नाना प्रकार की सजावट से झूले को सजाकर ठाकुरजी को झुलाय गया । अन्तिम पक्ष में एह साथ बारह हिंडोला कलात्मक ढंग से सजाकर ठाकुरजीको प्रसन्न किया गया । कलात्मक हिंडोला निर्माण स्वा. सत्यस्वरूपदासजी के मार्गदर्शन में किया गया । स्थानिक संत मंडल तथा युवक मंडल के सहयोग से हिंडोला बनाया गया । था.

पवित्र श्रावण मास में धर्मशास्त्र "सत्संगिजीवन" का पारायण कार्यक्रम रखा गया था । शा.स्वा. प्रेमवल्लभदासजीके वक्तापद पर पारायण सम्पन्न हुआ । हरिभक्तों ने दिव्य आनंद लिया ।

*- शैलेन्द्रसिंह झाला*

### सुरेन्द्रनगर मंदिर में भागवत पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से महंत स्वा. प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से मदिर में श्रीमद् भागवत दशमस्कन्ध का पारायण ता. ८-९-०४ के दिन आयोजित किया गया । स्वा. शा. सत्यस्वरूपदासजी मुख्य वक्ता पद पर थे । जिन्होनें कथा रसपान कराया । विशाल भक्त समुदायने कथा रसपान करके धन्यता का अनुभव किया ।

*- शैलेन्द्रसिंह झाला*

### सुरेन्द्रनगर नूतन मंदिर के बारसाक की पूजा विधि

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से मूली से राधाकृष्ण देव देश के नूतन मंदिर का निर्माण लगभग तीन करोड़ के खर्च से तैयार किया जा रहा है । इस शिखरी मंदिर का निर्माण कलात्मक ढंग से राजस्थान से पत्थर लाकर शिल्प स्थापत्य विधि से किया जा रहा है । इस मंदिर की पूजा विवि प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू. बाल लालजी महाराजश्री के वरद हाथों द्वारा जन्माष्टमी के शुभ दिन सम्पन्न कीया गयी । इस प्रसंग पर प.पू. बहूजी महाराज तथा श्री राजा पदार्पण करके सभी को दर्शन तथा आशीर्वाद का लाभ दिया था । अहमदावाद मूली इत्यादि मंदिरो से सन्त तथा आसपास के गाँवो के बड़ी संख्या में हरि भक्त पधारे थे । पूजा शास्त्रोक्त विधि से श्री अमृतभाई ने करायी थी । कार्यक्रम की व्यवस्था स्वा. प्रेमवल्लभदासजी तथा सत्यस्वरूपदासजीने की थी । स्थानिक न.ना.यु. मंडलने सत्संग समुदाय की सेवा करके प्रभु की प्रसन्नता की थी । मंदिर का निर्माण पूर्ण होने वाला है, मूर्ति प्रतिष्ठा का समय प.पू. महाराश्री की आज्ञा से निश्चित होगा । देव सेवा की इच्छा रखने वाले भक्तजन महंत स्वामी का सम्पर्क करें ।

### घनश्यामनगर हळवद

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से यहाँ पर न.ना.यु. मंडल ने सम्प्रदाय के शिक्षण विभाग का संचालन किया । करीब ४० मुमुक्षु युवानों ने भाग लिया । इस परीक्षा में दश विद्यार्थियों ने प्रथम स्थान प्राप्त किया । एक परीक्षार्थी द्वितीय स्थान पर, तीन विद्यार्थी तृतीय स्थान पर रहे। इस प्रकार १००%, ९९%, ९८% अंक प्राप्त करके धार्मिकज्ञान में अभिवृद्धि प्राप्त किया । इस प्रसंग पर सभा का आयोजन करके प.पू. महाराजश्री तथा श्रीहरि एवं भगवान नरनारायण की महिमा को बताया गया । हळवद के संतोने संत्संगको लाभ देकर इनाम वितरण किया ।

*-गोरधनभाई शिवाभाई घनश्यामनगर*

## विदेश सत्संग वृत्तान्त

### पर्थ (ओस्ट्रेलिया I.S.S.O.)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से पर्थ ओस्ट्रेलिया में सत्सं की प्रवृति अच्छी चल रही है । अदस्त सितम्बर मास की सत्संग सभा प.भ. हरेन्द्रभाई दवे, जगदीशभाई भुडीया, धनजीभाई भुडीया तथा विश्रामभाई

पींडोरीया तथा उनके परिवारजनों के यजमान पद पर सम्पन्न हुई थी । प्रत्येक सत्संग सभा में इस विस्तार के सत्संगी उपस्थित थे । इस सभा में धुनि, कीर्तन, कथा प्रवचन सत्संग सभाका नियमित आयोजन किया जाता है । सत्संग के यथार्थ ज्ञान वाले श्री जयेन्द्रभाई सोनी वचनामृत के पाठ के साथ व्याख्यान भी करते है । ता. ७-९-०४ के दिन जन्माष्टमी का उत्सव किया गया । सभा का प्रारम्भ भक्ति भजन, धुन, कीर्तन के साथ किया गया । भाई-बहन सभी अपनी मर्यादा में रासगर्बा में भाग लिये । कृष्ण जन्म की आरती तथा प्रसाद वितरण के साथ सभा विसर्जित हुई । प्रसाद की व्यवस्था के यजमान प.भ. प्रीतेशभाई हीराणी परिवार तथा धनजीभाई भुंडिया परिवार की तरफ से थी । यहाँ का सत्संग उत्तरोतर बढ़ता रहे एसी प्रभु को प्रार्थना ।

**श्री कच्छ सत्संग स्वामिनारायण मंदिर बोल्टन (U.K.)**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर (भुज) के महंत स्वामी हरिस्वरूपदासजी की आज्ञा से कच्छ श्री नरनारायण युवक मंडल तथा महिला मंडल की स्थापना यहाँ पधारे हुए संत मंडल के संत श्रीहरिदासजी स्वामी तथा शा.स्वा. कृष्ण स्वरूपदासजी के मार्गदर्शन में बोल्टन मंदिर में ता. १३-८-०४ के दिन सम्पन्न हुई । प्रथम दिन सें ही दोनो मंडल के करीब ४० चालीस सभासदो ने नाम लिखाया । दूसरे दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने साक्षात् दर्शन का लाभ देकर सभी को आशीर्वाद दिया दोनो मंडल ने २५००१ रूपये की सेवा स्वामिनारायण म्युजियम हेतु की ।

युवक मंडल : प्रमुखश्री मितेश वा. हालाई (दलीसरा) उप प्रमुख हरीशबा राधवाणी (बळदिया) मंत्रीश्री हीरालाल रा. भुडीया (दहीसरा) बडे सभ्य देवजी विश्राम एवं वागाजी करसन ।

मिहला मंडळ : शर्मीला बहन कं. खिमाणी (दहीसरा) प्रेमीला बहन क. वेकरीया (बडदीया) बालबाई कं. राधवाडी (बळदिया) मानबाई वा हालाई (मेघपुर) ।

*- देवजीभाई गांगजीआणी*

**बुवी मेरीलेन्ड वोशिंग्टन (I.S.S.O. चेप्टर)**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से इस विस्तार का सत्संग खूब उत्तम ढंग से चल रहा है । अगस्त महीने की २०वी ता. सायंकाल २ घंटे की सत्संग सभा धुनि, कीर्तन, वचनामृत पाठ, आरती, नित्य नियम द्वारा श्रीहरि को प्रसन्न किया गया ।

*- कनुभाई*

**सीडनी (ओस्ट्रेलीया I.S.S.O.)**

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से यहाँ सत्संग सेवा का कार्य बड़े सुचारु रूप से चल रहा है । नीचे के अनुसार सत्संग सभा का आयोजन किया गया ।

दि. ११-७-०४ महेशभाई त्रिवेदी
दि. २५-७-०४ अर्जुनभाई महेता
दि. ८-८-०४ मयंकभाई दवे
दि. १४-८-०४ हनुमान चालीसा
दि. २२-८-०४ हितेशभाई जानकी
दि. ५-९-०४ जन्माष्टमी उत्सव अरूणभाई शाह तथा मेहन्द्रभाई शाह जन्माष्टमी के दिन मंदिर में अन्नकूट की आरती तथा भगवान श्री कृष्ण के जन्मोत्सव को मनाया गया ।

*- जीगर दरजी*

**श्री स्वामिनारायण मंदिर संस्कारधाम गुरुकुल धांगध्रा**

मूलीधाम संकलित श्री स्वामिनारायण संस्कार धाम गुरुकुल धांगध्रा संचालित श्री तेजेन्द्रप्रसादजी पी.टी.सी. कालेज के विद्यार्थी श्री सुरेशभाई धनजीभाई जसाकणीया सन. २००३-२००४ की पी.टी.सी. परीक्षामें ३६.६३% अंक प्राप्त करके गुजरात में दशवा स्थान तता सुरेन्द्रनगर जिला में प्रथम स्थान प्राप्त किया ।

*- सा. नित्यप्रकाशदासजी*

## अक्षरनिवासी संत - हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

**गढडा :** गढपुर के गवैया स्वामी देवप्रसाददासजी २३-८-०४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हुए है ।

**सुरेन्द्रनगर :** प.भ. नारणदास पोपटलाल ठक्कर श्रावण शुक्ल-९ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हुए है ।

**अमदावाद :** उवारसदवासी प.भ. अंबालालभाई पटेल की धर्म पत्नी मंगुबा ४-९-०४ के दिन श्रीहरिका अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हुई ।

**अमदावाद :** अ.नि. डॉ. जयेन्द्रकुमार याज्ञिक की धर्म पत्नि तथा प.भ. जयन्तकुमार याज्ञिक की माता उर्मिला बहन २-९-०४ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करती अक्षरनिवासी हुई ।



सुरेन्द्रनगर मंदिर वारशाख ( देहली ) का पूजन करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री तथा बाल लालजी महाराजश्री ।



सुरेन्द्रनगर मंदिर में पूजन विधि करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री एवं पू. बाल लालजी महाराजश्री तथा संत मंडल ।



जयपुर ( राज. ) मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर अन्नकूट दर्शन ।



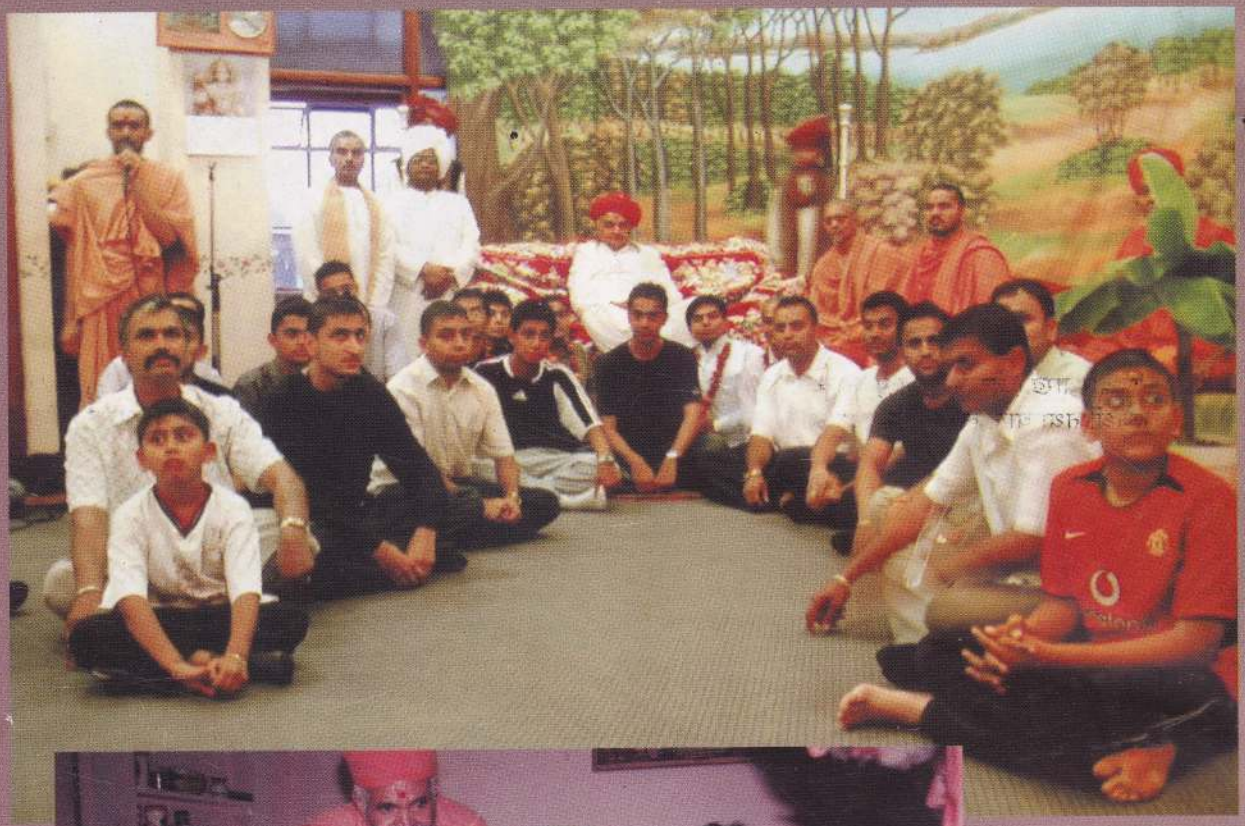
नारायणघाट मंदिर में श्री गणपतिजीका पूजन अर्चन करते प.पू. बाल लालजी महाराजश्री ।



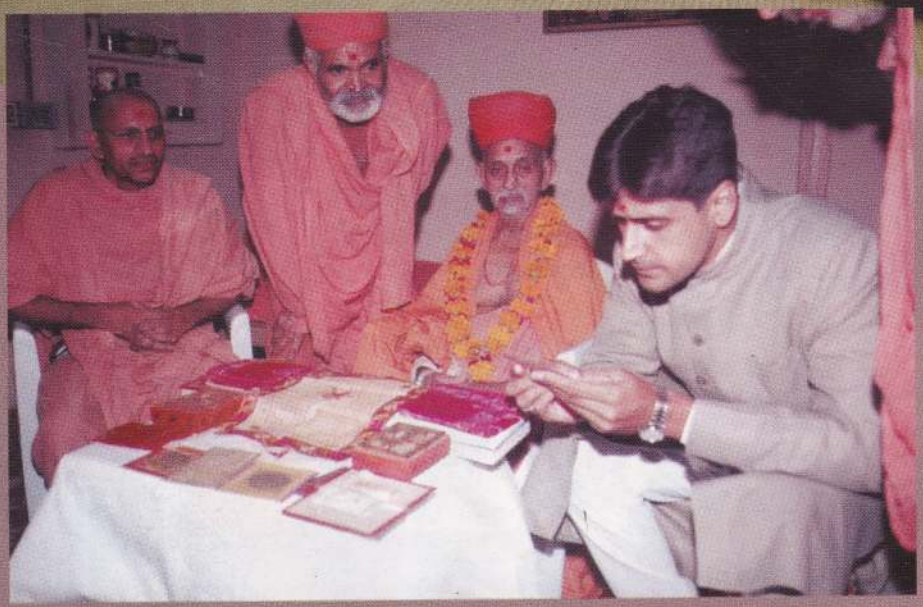
कांकरिया मंदिर में श्री महादेवजीका पूजन अर्चन करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री साथ में प.भ. हरिकृष्णभाई ।



जयपुर मंदिर में पाटोत्सव के यजमान प.भ. ठाकोरभाई सोमदास पटेल ( मेतपुर ) परिवार प.पू. लालजी महाराजश्री की आरती उतारते हुए साथ में स्वा. भक्तिनंदनदासजी ।



बोल्टन (U.K.) मंदिर में युवा हरिभक्तों के बीच में दर्शन देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के अलौकिक संकल्प प्रसादी के म्युजीयम के लिए अपने गुरुपरंपरा से प्राप्त श्रीहरि की प्रसादी की वस्तुओं को प.पू. लालजी महाराजको समर्पित करते हुए अहमदाबाद के विभूति त्यागमूर्ति संत गवैया स्वामी केशवजीवनदासजी के साथ पू. महंत स्वामी ।

Praful Kharsani